प्रतिमुद्रण

मार्च-2025,
अंक-17

सुरक्षित मुद्रण हमारी पहचान,
भारत प्रतिभूति मुद्रणालय राष्ट्र की शान।

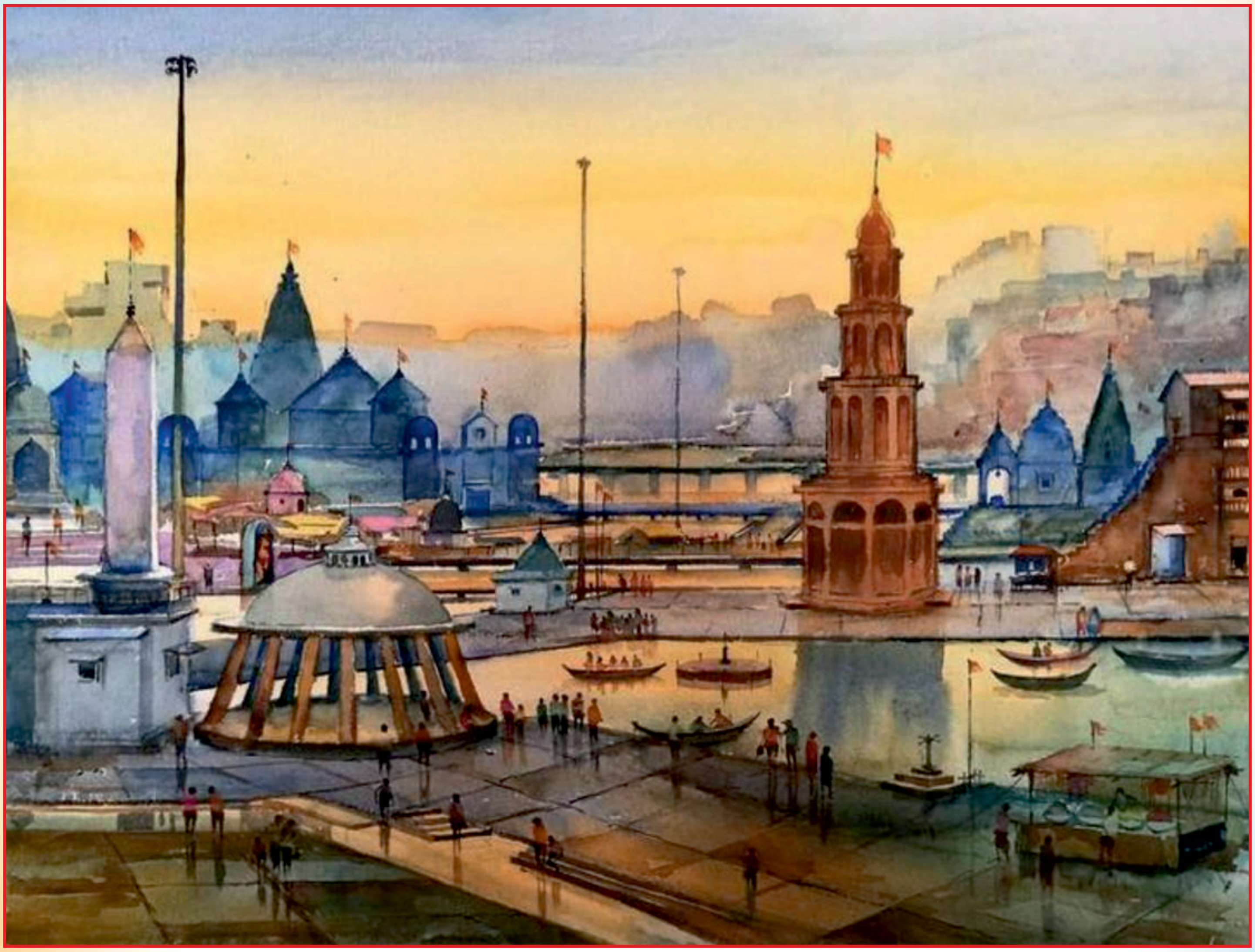

अनुक्रमणिका

अंक–17

मार्च, 2025

राजभाषा पत्रिका

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय

(एसपीएमसीआईएल की इकाई)

नासिक रोड-422101

संरक्षक

श्री राजेश बंसल

मुख्य महाप्रबंधक

सह संरक्षक

श्री डी. के. डेका

अपर महाप्रबंधक (सामग्री)

*** प्रधान संपादक ***

श्री अर्पित धवन

उप महाप्रबंधक एवं विभाग प्रमुख (मा.सं.)

*** संपादक ***

श्री लोकनाथ तिवारी

प्रबंधक (राजभाषा)

*** संपादन सहयोग ***

श्री एस. एस. निकुंब

वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)

हिंदी कक्ष

प्रतिमुद्रण

संदेश		पृ.सं.
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का संदेश		02
निदेशक (मा.सं.) का संदेश		03
मुख्य सतर्कता अधिकारी का संदेश		04
संरक्षक की कलम से		05
संपादकीय		07

रचनाएं	रचनाकार	पृ.सं.
सातचक्र एवं गुणवत्ता नियंत्रण उपकरणों के बीच अंतर संबंध	प्रमोद कुमार	08
कण-कण में भगवान	रुद्र प्रताप सिंह	10
श्रध्दांजलि	उमाकांत पंडित	11
एक अनोखी दीपावली	अभिषेक कुमार सिंह	12
आध्यात्मिक जीवन	सुश्मिता सोनजे	13
सोवियत संघ की 588 वीं महिला बमवर्षक रेजिमेंट	महिला दिवस 2025 के अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक के संबोधन का अंश	14
आंतरिक शांति एवं समृद्धि के सूत्र	अर्पित धवन	17
सिद्धि	रवि आसुदानी	19
काहे मनुज तु क्यों भागे	सुमति हेमंत टापसे	19
वास्तविक खुशी	गुंजन सिंगला	20
सुमित्रानंदन पंत: व्यक्तित्व एवं कृतित्व	एस.एस. निकुंब	21
हिंदी के राजभाषा बनने की विकास यात्रा	लोकनाथ तिवारी	24
बाघिन की बेबसी	दिलीप पांचाल	32
आयकर नीति 2025	प्रशांत वडसाल	33
हिंदी पखवाडा 2025 की रिपोर्टिंग		36
गतिविधियाँ (संकलन)	विक्रांत कुमार	38

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं ।
भा.प्र.मु. प्रबंधन और संपादक मण्डल का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है ।

विजय रंजन सिंह
VIJAY RANJAN SINGH
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
Chairman & Managing Director
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश......

मुझे यह जानकार बहुत प्रसन्नता हो रही है कि आईएसपी, नासिक द्वारा राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' के 17 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है।

आईएसपी, नासिक राष्ट्र का एक महत्वपूर्ण संस्थान है जो इस वर्ष अपने स्थापना के 100 वें वर्ष में प्रवेश कर चुका है| यह हम सभी के लिए बहुत गर्व की बात है कि हम लगातार अपने उत्कृष्ट प्रदर्शन से राष्ट्र की अनवरत सेवा कर रहे हैं| यह हमारे लिए उपलब्धियों के साथ – साथ गुरुतर उत्तरदायित्व भी है कि हम अपना उत्कृष्ट प्रदर्शन ऐसे ही करते रहें और एसपीएमसीआईएल की एक श्रेष्ठ इकाई के रुप में अपनी पहचान बनाए रखें|

आईएसपी एक औद्योगिक संस्थान है जो मांग के अनुसार प्रतिभूति उत्पादों का उत्पादन करता है तथापि 'प्रतिमुद्रण' के माध्यम से आईएसपी कर्मचारियों ने अपनी बेहतरीन रचनात्मक क्षमता का परिचय दिया है जिसके लिए वे साधुवाद के पात्र हैं|

रचनात्मक लेखन और आत्मिक संवाद से मानसिक और शारीरिक दोनों तरह की थकावट दूर होती है| मुझे यह जानकार हर्ष है कि " प्रतिमुद्रण" इस कार्य को बहुत शानदार तरीके से अंजाम दे रहा है|

रचनात्मक व्यक्ति सदा आशावादी और सृजनात्मक माना जाता है और वह सदैव सकारात्मक ऊर्जा से भरपूर रहता है| ईश्वर से मेरी यह प्रार्थना है कि आईएसपी का प्रत्येक कर्मचारी सृजनात्मक और रचनात्मक ऊर्जा से भरपूर रहे और अपने निष्ठापूर्ण कार्यों के द्वारा सजग रहते हुए आईएसपी की प्रतिष्ठा में चार चाँद लगाता रहे|

अंत में, मैं 'प्रतिमुद्रण' के 17 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए संपादक और उनकी पूरी टीम को शुभकामनाएं देते हुए अपनी लेखनी को यही विराम देता हूँ।

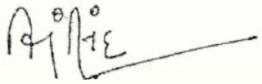

(विजय रंजन सिंह)
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

सुनील कुमार सिन्हा
SUNIL KUMAR SINHA
निदेशक (मानव संसाधन)
Director (Human Resource)
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश......

'प्रतिमुद्रण' के 17 वें अंक के प्रकाशन के लिए आप सभी को मेरी शुभकामनाएं ।

मुझे यह जानकार बहुत हर्ष हो रहा है कि आईएसपी इस वर्ष अपने शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका है | इस अवसर पर मैं गौरवान्वित हूँ कि मैं इस गौरवशाली इकाई का एक हिस्सा हूँ|

मुझे यह जानकार हर्ष होता है कि आईएसपी के सभी कर्मचारी पूरी ईमानदारी एवं लगन से अपना कार्य करते हैं और बेहतर कार्य संस्कृति के माध्यम से वार्षिक उत्पादन लक्ष्यों के साथ – साथ दैनिक उत्पादन लक्ष्यों को भी साधते हैं ।

मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि आईएसपी के शताब्दी वर्ष के कारण सभी कर्मचारियों में नई ऊर्जा का संचार हुआ है और उनके भीतर संस्थान के प्रति गौरव बोध का भाव भरा है | यह सकारात्मक ऊर्जा इसी प्रकार आईएसपी के सभी कर्मचारियों में भरी रहे और सभी मिलकर आईएसपी को एसपीएमसीआईएल की एक गौरवशाली इकाई के रुप में राष्ट्रीय पहचान दिलाते रहें, ईश्वर से मेरी यही कामना है|

हमें यह याद रखना चाहिए कि हम सबसे पहले मनुष्य है । संवेदनाएं हमारी सर्वश्रेष्ठ मानवीय पूंजी हैं । इसी के माध्यम से हम समाज या साथी कर्मचारियों के सुख –दुख को समझ पाते हैं और उसमें भागीदार बनते हैं । बेहतर कार्य संस्कृति के निर्माण के लिए बेहतर मनुष्य बनना पहला एवं अनिवार्य शर्त है और यह स्वयं सिद्ध तथ्य है कि बेहतर मनुष्य के निर्माण में साहित्य एवं कलाओं का महत्वपूर्ण योगदान होता है । अगर हम संवेदनशील एवं बेहतर मनुष्य बन गए तो बाकी चीजे स्वतः व्यवस्थित होती चली जाती है । इस कार्य में राजभाषा पत्रिका का महत्व किसी से छुपा नहीं है ।

अंत में मैं यह कामना करता हूँ कि इस शताब्दी वर्ष में आईएसपी नित्य नए आयाम को छुएँ और आईएसपी के सभी कर्मचारी अपने कार्यों से संस्थान को इसी प्रकार गौरवान्वित करते रहें ।

“प्रतिमुद्रण” के 17 वें अंक की सफलता की कामना के साथ संपादक और उनकी पूरी टीम को पुनः शुभकामनाएँ|

(सुनील कुमार सिन्हा)

***विनय कुमार सिंह,* भा.रा.से.**
***VINAY K. SINGH,* I.R.S.**
मुख्य सतर्कता अधिकारी
Chief Vigilance Officer
भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड
Security Printing & Minting Corporation of India Limited

संदेश......

सबसे पहले आईएसपी के सभी कर्मचारियों को शताब्दी वर्ष में प्रवेश करने पर हार्दिक बधाई और अशेष शुभकामनाएँ|

मुझे यह जानकर अत्यंत हर्ष हो रहा है कि आईएसपी, नासिक की राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' के 17 वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है । किसी भी संस्थान द्वारा लगातार राजभाषा पत्रिका का प्रकाशन इस बात का सूचक है कि वहाँ के कर्मचारी कार्यालय कार्य के अतिरिक्त साहित्य एवं अन्य गतिविधियों में भी रुचि रखते हैं । इस संदर्भ में राजभाषा पत्रिका इकाई में बौद्धिक खुराक का कार्य करती हैं । यह ना केवल अभिव्यक्ति का माध्यम होती है वरन इसके द्वारा इकाई की विभिन्न गतिविधियों की सूचनाएं भी प्राप्त होती हैं ।

“प्रतिमुद्रण” के माध्यम से आईएसपी के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हिंदी में अभिव्यक्ति का अवसर प्राप्त हुआ है जिससे राजभाषा हिंदी के संवैधानिक लक्ष्यों की प्राप्ति की दिशा में सार्थक कदम माना जा सकता है ।

'प्रतिमुद्रण'के 17 वें अंक के सफल प्रकाशन के लिए मैं संरक्षक,संपादक तथा समस्त अधिकारियों एवं कर्मचारियों को हार्दिक बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी राजभाषा पत्रिका 'प्रतिमुद्रण' का सतत प्रकाशन होता रहेगा ।

शुभकामनाओं सहित......

(विनय कुमार सिंह)
मुख्य सतर्कता अधिकारी

राजेश बंसल
RAJESH BANSAL
मुख्य महाप्रबंधक
Chief General Manager
भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड.
India Security Press, Nashik Road.

संरक्षक की कलम से.....

नमस्कार,

'प्रतिमुद्रण' के 17 वें अंक के साथ मुझे आपके साथ संवाद करने का पुनः अवसर प्राप्त हुआ है | आईएसपी ने राजभाषा के क्षेत्र में अपनी प्रतिबद्धता को पूरा करते हुए गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग के दिशानिर्देशों के अनुसार वार्षिक कार्यक्रम 2024-2025 के सभी लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त किया है | साथ ही नराकास, नासिक में अपनी सक्रिय भागीदारी निभाई है | मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि संस्थान के सभी कर्मचारी राजभाषा के संवैधानिक कर्तव्यों के प्रति पूर्ण जागरुक और राजभाषा में कार्य करने के प्रति उत्सुक हैं |

मुझे यह सूचित करते हुए बहुत हर्ष हो रहा है कि आईएसपी, नासिक अपने स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका है | आज से ठीक 100 वर्ष पहले आईएसपी की स्थापना के लिए नींव का पत्थर ब्रिटिश शासन द्वारा नासिक की पवित्र भूमि पर डाला गया था | तब से लेकर आज तक आईएसपी राष्ट्र सेवा में निरंतर अपना महत्वपूर्ण योगदान देता रहा है | अतीत से वर्तमान तक आईएसपी सुरक्षित मुद्रण की पहचान रहा है |

इस दौरान इस संस्थान ने बहुत सी उपलब्धियां अपने नाम की है | फिर चाहे वह राष्ट्र के लिए सुरक्षित यात्रा दस्तावेज़ के रुप में भारतीय पासपोर्ट हो या फिर एमआईसीआर चेकबुक या फिर भारतीय डाक के विभिन्न उत्पादों का उत्कृष्ट मुद्रण –आईएसपी ने सदा ही राष्ट्र और इसके नागरिकों की धड़कन को छुआ है | आईएसपी के प्रतिभूति मुद्रण के इस लंबे इतिहास में ई -पासपोर्ट का नाम भी जुड़ गया है | बहुत जल्द भारतीय नागरिकों को ई – पासपोर्ट की सेवाएँ प्राप्त होने वाली है |

मुझे इस बात को बताते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है कि आईएसपी को गवर्नेंस नाउ, 11वें पीएसयू पुरस्कार, 2025 में संकट प्रबंधन श्रेणी में परिचालन उत्कृष्टता पुरस्कार प्रदान किया गया है। इसके अलावा, कर्मचारी विकास और कल्याण के प्रति आईएसपी की प्रतिबद्धता के कारण और इस क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने के लिए आईएसपी को 8वें भारत एचआर शिखर सम्मेलन में वर्ष 2024 का " सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य और कल्याण पुरस्कार" तथा कार्यस्थल पर स्वास्थ्य प्रबंधन के लिए "33 वाँ ग्लोबल एचआर एक्सिलेंस अवार्ड" से सम्मानित किया गया |

आगे, आईएसपी नासिक को नैसर्गिक प्रतिभा को पहचानने, सीखने एवं कार्य वातावरण को बढ़ावा देने की प्रतिबद्धता के सम्मान में, आईएसपी, नासिक को विश्व एचआरडी कांग्रेस द्वारा 'प्रशिक्षण और संगठनात्मक विकास में सर्वश्रेष्ठ' के लिए ''स्टार्स ऑफ इंडस्ट्री अवार्ड'' से भी सम्मानित किया गया |

राजभाषा के क्षेत्र में भी आईएसपी ने नवंबर 2024 में नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन का प्रोत्साहन पुरस्कार प्राप्त किया|

इसके अतिरिक्त, आईएसपी ने डाक टिकटों के माध्यम से नासिक शहर की कलात्मक प्रस्तुति "मेरा शहर, मेरा स्वाभिमान" पुस्तक प्रकाशित की जिसे वर्ल्ड ट्रेड सेंटर, मुंबई में दिनांक 25.01.2025 को आयोजित महाराष्ट्र फिलैटेलिक प्रदर्शनी में "लार्ज सिल्वर मेडल" से पुरस्कृत किया गया|

आईएसपी ने फेस बेस्ड टर्नस्टाइल एक्सेस कंट्रोल सिस्टम को सफलतापूर्वक लागू किया है। इस सिस्टम का अब एक्सेस मैनेजमेंट और कर्मचारी उपस्थिति दोनों के लिए प्रभावी रुप से उपयोग किया जा रहा है, जिससे उपस्थिति ट्रैकिंग को सुव्यवस्थित करते हुए सुरक्षित, संपर्क रहित प्रवेश सुनिश्चित किया जा रहा है। यह सिस्टम आईएसपी की बुनियादी सुरक्षा ढांचे में एक बड़ी भूमिका निभा रहा है | साथ ही आईएसपी, नासिक में आईपी आधारित सीसीटीवी सिस्टम स्थापित किया गया है जिसके कारण एक ऑनलाइन, वर्कफ़्लो-आधारित आगंतुक प्रबंधन प्रणाली लागू की गई जिससे परिचालन दक्षता में वृद्धि हुई है तथा वास्तविक समय में आगंतुक ट्रैकिंग की सुविधा उपलब्ध हुई है जिससे आईएसपी की सुरक्षा व्यवस्था में काफी सुधार हुआ है।

मुझे इस बात का पूरा विश्वास है कि आईएसपी की सफलता की कहानी आने वाले समय में बेहतर से बेहतरीन होते जाएगी और आईएसपी की साख अपने कर्मचारियों की निष्ठा, कार्य दक्षता और कौशल के कारण निरंतर निखरती रहेगी| इन्हीं शुभकामनाओं के साथ....

(राजेश बंसल)
मुख्य महाप्रबंधक

संकट प्रबंधन श्रेणी में परिचालन उत्कृष्टता के लिए आईएसपी, नासिक को 11वें गवर्नेंस नाउ, पीएसयू पुरस्कार से पुरस्कृत किया गया।

संपादकीय......

नमस्कार |

"प्रतिमुद्रण" के 17 वें अंक के साथ हम आपकी सेवा में पुनः उपस्थित हैं। आशा है यह अंक भी पिछले अंकों की तरह पठनीय एवं संग्रहणीय सिद्ध होगा।

देखते ही देखते पिछला वर्ष 2024 बीत गया और नये वर्ष का आगमन हो गया। नये वर्ष में आप लोगों ने कुछ नया और बेहतर करने का संकल्प लिया होगा। मैं आपके सभी संकल्पों के पूरा होने की कामना करता हूँ।

पिछला वर्ष जाते – जाते खेल, साहित्य, कला, विज्ञान, उद्योग जगत की दिग्गज हस्तियों ने हमारा साथ छोड दिया जिसमें प्रसिद्ध तबला वादक जाकिर हुसैन, बिहार कोकिला शारदा सिन्हा, उद्योगपति रत्न टाटा, प्रसिद्ध क्रिकेट कोच अंशुमान गायकवाड, रामोजी फिल्म सिटी के संस्थापक रामोजी राव, प्रसिद्ध वॉयस आर्टिस्ट अमीन सयानी, अपने गजलों से सभी के दिलों पर राज करने वाले पंकज उधास जैसे मशहूर नाम हैं | आईएसपी, नासिक इन हस्तियों को अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता है |

इस वर्ष आईएसपी, नासिक अपने स्थापना के शताब्दी वर्ष में प्रवेश कर चुका है | इसलिए यह वर्ष आईएसपी के लिए विभिन्न गतिविधियों से भरा होगा | आगामी अंकों में इतकी झलक आपको देखने को मिलेगी।

'प्रतिमुद्रण' का यह अंक आपको कैसा लगा – अपनी प्रतिक्रिया से हमें अवश्य अवगत कराएं। प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में ...

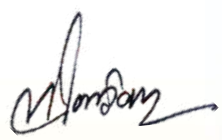

(लोकनाथ तिवारी)
प्रबंधक (राजभाषा) एवं संपादक

सात चक्र एवं सात गुणवत्ता नियंत्रण उपकरणों के बीच अंतर संबंध

प्रमोद कुमार,
अपर महाप्रबंधक
(आर एंड डी), एवीपी (सीबीएसआई)

भूमिका :- यह लेख सात चक्रों, प्राचीन आध्यात्मिक परंपराओं में प्रमुख ऊर्जा केंद्रों और कुल गुणवत्ता प्रबंधन (टीक्यूएम) में उपयोग किए जाने वाले सात गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूसी) उपकरणों के बीच रूपक और कार्यात्मक सहसंबंध को दर्शाता है। आध्यात्मिक और प्रक्रिया प्रबंधन क्षेत्रों के बीच समानताएं बनाकर, अध्ययन का उद्देश्य एक अद्वितीय परिप्रेक्ष्य प्रदान करना है जो व्यक्तिगत और संगठनात्मक विकास को एकीकृत करता है।

1. परिचय :- चक्रों की अवधारणा प्राचीन भारतीय आध्यात्मिक प्रथाओं से उत्पन्न हुई है और इसे मानव शरीर के भीतर ऊर्जा प्रवाह को समझने के लिए एक रुपरेखा के रुप में माना जाता है। दूसरी ओर, सात गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूसी) उपकरण, गुणवत्ता प्रबंधन और प्रक्रिया सुधार के लिए व्यावहारिक तकनीक हैं। उनकी विशिष्ट उत्पत्ति के बावजूद, यह लेख आध्यात्मिक ज्ञान और आधुनिक विश्लेषणात्मक उपकरणों के बीच तालमेल पर जोर देते हुए, उनके अंतर्संबंध का विवेचन और अनुसंधान करता है।

2. चक्रों का अवलोकन और उनका महत्व:-

सात चक्र रीढ़ की हड्डी के साथ संरेखित ऊर्जा केंद्रों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें से प्रत्येक विशिष्ट भावनात्मक, शारीरिक और आध्यात्मिक विशेषताओं के अनुरुप है। इनमें जड़ (मूलाधार), त्रिक (स्वाधिष्ठान), सौर जाल (मणिपुर), हृदय (अनाहत), गला (विशुद्ध), तीसरी आंख (अजना), और मुकुट (सहस्रार) चक्र शामिल हैं। प्रत्येक चक्र व्यक्तिगत विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है,जो क्रमशः स्थिरता, रचनात्मकता, सशक्तिकरण, संतुलन, संचार, अंतर्दृष्टि और उच्च चेतना का प्रतीक है।

3. सात गुणवत्ता नियंत्रण (क्यूसी) उपकरणों का अवलोकन :- सात क्यूसी उपकरण मूलभूत तकनीकें हैं जिनका उपयोग प्रक्रियाओं में गुणवत्ता से संबंधित मुद्दों की पहचान, विश्लेषण और समाधान करने के लिए किया जाता है। इनमें कारण और प्रभाव आरेख, फ़्लोचार्ट, पेरेटो चार्ट, चेक शीट, नियंत्रण चार्ट, हिस्टोग्राम और स्कैटर आरेख शामिल हैं। उद्योगों में व्यापक रुप से नियोजित, ये उपकरण निरंतरता बनाए रखने, अक्षमताओं को खत्म करने और निरंतर सुधार को बढ़ावा देने में मदद करते हैं।

4. तुलनात्मक विश्लेषण: चक्र और क्यूसी उपकरण :-

इस खंड में चक्रों और क्यूसी उपकरणों के बीच उनके अंतर्निहित विषयों और कार्यात्मकताओं के आधार पर एक रुपक संरेखण स्थापित किया गया है।

4.1मूल चक्र (मूलाधार)-कारण-और-प्रभाव आरेख :-

- चक्र थीम: स्थिरता, सुरक्षा और नींव।
- गुणवत्ता उपकरण: कारण-और-प्रभाव आरेख (इशिकावा या फिशबोन आरेख) ।
- सह-संबंध: मूल चक्र स्थिरता और ऊर्जा के लिए आधार प्रदान करता है। इसी तरह, कारण-और-प्रभाव आरेख समस्याओं के मूलभूत कारणों की पहचान करने में मदद करता है, समाधान के लिए एक संरचित आधार प्रदान करता है।

4.2 त्रिक चक्र (स्वाधिष्ठान) – फ़्लोचार्ट :-

- चक्र थीम: रचनात्मकता, भावनाएँ और प्रवाह।
- गुणवत्ता उपकरण: फ़्लोचार्ट।
- सह-संबंध: त्रिक चक्र ऊर्जा के रचनात्मक और भावनात्मक प्रवाह से जुड़ा है। फ़्लोचार्ट प्रक्रियाओं को जानकर, वर्कफ़्लो में सुचारु या बाधित "प्रवाह" को उजागर करता है।

4.3 सौर जाल चक्र (मणिपुर)-पॅरैटो चार्ट :-

- चक्र विषय / विषयवस्तु: शक्ति, आत्मविश्वास और नियंत्रण।
- गुणवत्ता साधन:पॅरैटो चार्ट।
- सह-संबंध: सौर जाल चक्र सशक्तिकरण और फोकस का प्रतीक है। पॅरैटो चार्ट समस्याओं के कुछ महत्वपूर्ण कारणों को प्राथमिकता देने, टीमों को प्रभावी ढंग से नियंत्रण लेने के लिए सशक्त बनाने पर केंद्रित है।

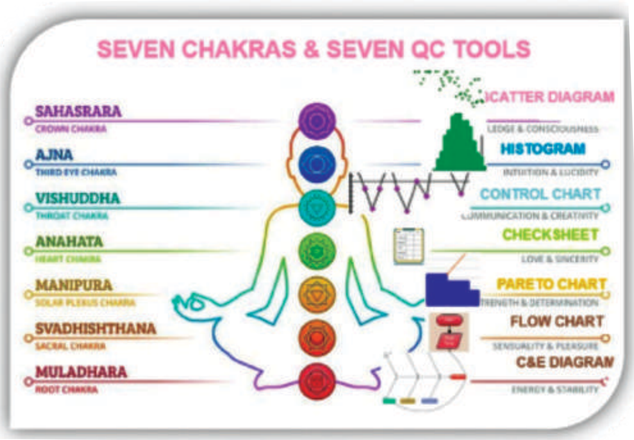

4.4. हृदय चक्र (अनाहत) - चेक शीट :-

- चक्र विषय/विषयवस्तु: करुणा,संतुलन और रिश्ते।
- गुणवत्ता साधन: चेक शीट।
- सह-संबंध: हृदय चक्र भावनात्मक और संबंध- परक ऊर्जा को संतुलित करता है। इसी तरह, चेक शीट डेटा संग्रह में संतुलन बनाए रखती है, जिससे विश्लेषण के लिए सटीक, सुसंगत जानकारी सुनिश्चित होती है।

4.5. थ्रोट / गला चक्र (विशुद्ध) - नियंत्रण चार्ट :-

- चक्र विषय / विषयवस्तु: संचार और अभिव्यक्ति।
- गुणवत्ता साधन: नियंत्रण चार्ट।
- सह-संबंध: गला चक्र स्पष्ट संचार को नियंत्रित करता है। एक नियंत्रण चार्ट प्रक्रियाओं में विविधताओं का संचार करता है, यह सुनिश्चित करता है कि प्रक्रियाएं "नियंत्रण" में रहें।

4.6. तीसरा नेत्र चक्र (अजना) – हिस्टोग्राम (आयतचित्र) :-

- चक्र विषय/विषयवस्तु: अंतर्दृष्टि, अंतर्ज्ञान और धारणा।
- गुणवत्ता उपकरण/साधन: हिस्टोग्राम।
- सह-संबंध: तीसरा नेत्र चक्र धारणा और समझ से संबंधित है। हिस्टोग्राम डेटा वितरण और पैटर्न में सहज अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, एक स्पष्ट परिप्रेक्ष्य प्रदान करता है।

4.7. क्राउन चक्र (सहस्रार) - स्कैटर आरेख:-

- चक्र विषय / विषयवस्तु: उच्च ज्ञान और सार्वभौमिक संबंध।
- गुणवत्ता उपकरण/साधन: स्कैटर आरेख।
- सह-संबंध: क्राउन चक्र सार्वभौमिक चेतना से जुड़ता है। एक स्कैटर आरेख वेरिएबल्स के बीच कनेक्शन और संबंधों को प्रकट करता है, गहरी समझ और समाधान को बढ़ावा देता है।

5. आध्यात्मिक ज्ञान और प्रक्रिया प्रबंधन का एकीकरण :-

क्यूसी उपकरणों के साथ चक्रों के सिद्धांतों को एकीकृत करना व्यक्तिगत ऊर्जा और संगठनात्मक वर्कफ़्लो के बीच संतुलन पर जोर देता है। समग्र दृष्टिकोण को अपनाकर, व्यवसाय न केवल परिचालन उत्कृष्टता को बढ़ावा दे सकते हैं, बल्कि अपने कार्यबल की क्षमता को भी बढ़ा सकते हैं, जिससे रचनात्मकता, उत्पादकता और सद्भाव में वृद्धि होगी।

कण-कण में भगवान

रुद्र प्रताप सिंह
प्रबंधक (सू. प्रौ.)

महर्षि उद्यलक एक बडे ही ज्ञानी व्यक्ति थे। सभी को एक समान देखने का महत्व वह समझते थे। उनका एक पुत्र था जिसका नाम श्वेतकेतु था। श्वेतकेतु के बडे हो जाने पर उस वक्त की प्रथा के अनुसार उसे उसके गुरु के घर ज्ञान प्राप्ति के लिए भेजा गया। श्वेतकेतु ने ज्ञान तो प्राप्त कर लिया लेकिन उसे अपने ज्ञान पर बडा गुरुर हो गया।

ज्ञान प्राप्त कर लौटे श्वेतकेतु को देखते ही महर्षि उद्दालक समझ गए कि पुत्र में घमंड घर कर गया है। उन्होंने एक दिन श्वेतकेतु से पूछा, 'पुत्र, क्या तुमने कभी उस ज्ञान की खोज की है, जिसके द्वारा अनसुना सुना जा सकता है, अदृश्य देखा जा सकता है और अज्ञेय जाना जा सकता है?' महर्षि मे ने तब मिट्टी, पानी और बीज के उदाहरण से समझाया कि किस तरह संपूर्ण सृष्टि एक ही तत्व से बनी है।

हर कण में ब्रह्म :-

महर्षि उद्यलक ने श्वेतकेतु को छांदोग्य उपनिषद का महावाक्य बताया, 'तत्वमसि'- वह तुम ही हो। यह परम वाक्य कहता है कि ब्रह्म हर जीव और हर वस्तु में है। वही परम तत्व है। किसी का भी अस्तित्व केवल वहीं तक सीमित नहीं होता, जैसा वह बाहर दिखता है। मूल तो वह ब्रह्म है, वह एटम, जो दिखता नहीं, लेकिन हमेशा से वहीं है जो नष्ट नही होता और अनंत काल से चक्र में चला आ रहा है।

पानी में नमक :-

इसी तरह, एक गिलास पानी में नमक घोलकर उन्होंने बेटे से पूछा, 'नमक कहां है?''नमक तो पानी में घुल गया, पर इसका स्वाद हर बूंद में है।'श्वेतकेतु को असली ज्ञान मिल चुका था कि जिस तरह नमक पानी में अदृश्य होकर भी हर जगह मौजूद है, उसी तरह संपूर्ण ब्रह्माड में ब्रह्म व्याप्त है।

पंचभूत सिद्धांत :-

भारतीय दर्शन और आयुर्वेद में पंचभूत का महत्वपूर्ण सिद्धांत है। इसके अनुसार, संपूर्ण ब्रह्मांड पांच तत्वों से बना हैं - पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु और आकाश। हर जीवित प्राणी इन्हीं पांच तत्वों से बना है। मृत्यु के बाद, अंतिम संस्कार के बाद शरीर फिर इन्ही पांच तत्वों में मिल जाता है। ब्रह्म विलीन हो जाता महाब्रह्म में और एक बार फिर सृजन की तैयारी शुरु होती है।

बीज का उदाहरण :-

महर्षि उद्दालक ने श्वेतकेतु को बरगद का एक फल देते हुए काटने को कहा।'अंदर क्या निकला?' श्वेतकेतु ने जवाब दिया, 'बीज।'' अब इस बीज को काटकर देखो कि इसके भीतर क्या है ?'' इसमें तो कुछ भी नहीं है पिताजी', पुत्र की इस बात पर महर्षि ने मुस्कुराते हुए कहा, 'जिसे तुम नहीं देख पा रहे, उसी से बरगद का एक बड़ा पेड़ बनेगा।'

अनदेखा बंधन :–

महर्षि ने पंचभूतों को समझाते हुए कहा कि हम जो अनाज खाते है, वह मिट्टी में उगता है। हमारे शरीर में लगता है और शरीर फिर मिट्टी में मिल जाता है। यह मिट्टी

न जाने कितने बरसों से इस धरती पर घूम रही होगी। न जाने कितने रुप बदले होंगे इसने। कभी इसने इंसान का रुप धरा होगा, कभी शेर का, लेकिन इसका मूल कभी नहीं बदला। न इसका ब्रह्म बदला और न एटम। हमने जो हवा ली, वह कभी किसी और ने भी सांसों में भरी होगी। यूं अणुओं ने हर किसी को एक बंधन में भी बांध रखा है। एक अनदेखा रिश्ता कायम कर दिया है सभी के बीच।

सभी का सम्मान : -मुण्डकोपनिषद का मंत्र है, 'ब्रह्मैवेदममृतं पुरस्तात' यानी यह संपूर्ण जगत ब्रह्म से ही व्याप्त है - आगे, पीछे, दाएं, बाएं, ऊपर, नीचे, हर दिशा में। जब सभी में वही परम तत्व है, तो हर जीव और वस्तु को सम्मान देना चाहिए। यही विचार हमें वसुधैव कुटुम्बकम की ओर ले जाता है ।

* * * * * * * *

।। श्रध्दांजलि।।

उमाकांत पंडित
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

एक दिन जब ऑफिस के सभी कर्मचारी ऑफिस पहुँचे, तो उन्हें दरवाजे पर एक पर्ची चिपकी हुई मिली जिस पर लिखा था – "कल उस इंसान की मृत्यु हो गई, जो कंपनी में आपकी प्रगति में बाधक था, उसे श्रद्धांजलि देने के लिए सेमिनार हॉल में एक सभा आयोजित की गई है | ठीक 11 बजे श्रद्धांजलि सभा में सबका उपस्थित होना अपेक्षित है।"

अपने एक सहकर्मी की मृत्यु की खबर पढ़कर पहले तो सभी दु:खी हुए लेकिन कुछ देर बाद उन सब में यह जिज्ञासा उत्पन्न होने लगी कि आखिर वह कौन था, जो उनकी और कंपनी की प्रगति में बाधक था ? 11 बजे सेमिनार हॉल में कर्मचारियों का आना प्रारंभ हो गया | धीरे-धीरे वहाँ इतनी भीड़ जमा हो गई कि उसे नियंत्रित करने के लिए सुरक्षा गार्ड की व्यवस्था करनी पड़ी। लोगों का आना लगातार जारी था | जैसे-जैसे लोगों की भीड़ बढ़ती जा रही थी, सेमिनार हॉल में हलचल भी बढ़ती जा रही थी | सबके दिमाग में बस यही चल रहा था "आखिर वो कौन था, जो कंपनी में मेरी प्रगति में बाधक था? चलो, एक तरह से ये अच्छा ही हुआ कि उसकी मृत्यु हो गई" | श्रद्धांजलि सभा प्रारंभ हुई, एक-एक करके सभी उत्सुक और जिज्ञासु कर्मचारी कफ़न के पास जाने लगे | करीब पहुँचकर जैसे ही कर्मचारी कफ़न के अंदर झांकते, उनका चेहरा बहुत उदास पड़ जाता मानो उन्हें सदमा लग गया हो | उस कफ़न के अंदर एक दर्पण रखा हुआ था जो भी उसमें झांककर देखता, उसे उसमें अपना ही चेहरा नज़र आता | उस दर्पण पर एक पर्ची भी चिपकी हुई थी, जिस पर कुछ ऐसा लिखा था जो सबकी आत्मा को झकझोर रहा था।

''केवल एक ही इंसान आपकी प्रगति में बाधक है और वह आप खुद है | आप ही वह इंसान हैं, जो अपने जीवन में क्रांति उत्पन्न कर सकते हैं | आप ही वह इंसान हैं, जो अपनी खुशी, अपनी समझ औरअपनी सफलता को प्रभावित कर सकते हैं | आप ही वो इंसान हैं, जो अपनी खुद की मदद कर सकते हैं | जब आपका बॉस बदल जाता है; आपका जीवन नहीं बदलता, जब आपके दोस्त बदल जाते है; आपका जीवन नहीं बदलता, आपका जीवन तब बदलता है, जब "आप खुद" बदल जाते हैं | जब आप अपने खुद के विश्वास की सीमा को लांघकर उसके पार जाते हैं, जब आप ये समझ जाते हैं कि आप और सिर्फ आप अपने जीवन के लिए जिम्मेदार हैं, तब आपका जीवन बदल जाता है | सबसे महत्वपूर्ण रिश्ता जो आपका किसी के साथ है, वो आपका खुद से है।"

* * * * * * * *

एक अनोखी दीपावली

(अभिषेक कुमार सिंह)
उप महाप्रबंधक (वित्त एवं लेखा)

दीपावली के पटाखों की शोर से कान के पर्दे फटने की स्थिति में थे । पुलिस प्रशासन के लाख अपील करने के बाद भी शोर एवं प्रदूषण फैलाने वाले पटाखे लगातार अपनी आवाज से गली के कुत्तों को डरा रहे थे । मैं शुरु से ही पटाखे जलाने के खिलाफ रहा हूँ क्योंकि मुझे यह पैसे की बर्बादी के अलावा यह वातावरण एवं आस –पास के लोगों की परेशानी वाला सबब लगता था । हाँ, शाम को मैं दीपक जरुर जलाता था । रोशनी के त्यौहार को बिना रोशनी के कैसे मना सकते हैं ।

बहरहाल, मैं अपने बरामदे में बैठकर एफ.एम. पर गाने सुन रहा था । तभी अचानक मेरी नजर अपने पडोस की एक बच्ची पर गई । मैंने देखा वह दूर से ही दूसरे बच्चों के पटाखे जलाने का आनंद ले रही थी पर खुद एक भी पटाखा नहीं जला रही थी । मुझे उस बच्ची के घर की माली हालत का अंदाजा था । इसलिए मैंने उसे इशारे से अपने पास बुलाया और पूछा " गुडिया तुमने पटाखे नहीं जलाए" । गुडिया ने बहुत ही मासूमियत के साथ जवाब दिया "नहीं भईयाँ पापा के पास पैसे नहीं है" । मैंने फिर पूछा " खाना क्या बना है" । उसने फिर उसी मासूमियत के साथ कहा " भईयाँ सुबह की भात थी, वही खाया है"। गुडिया की मासूमियत और उसके जवाब ने मुझे थोड़ी देर के लिए सन्न कर दिया । मन में करुणा का ऐसा उभान आया कि लगा दिल फट जायेगा। मैं तुरंत उसे पटाखे की दुकान पर ले गया और कहा "तुम्हें जो भी पटाखा अच्छा लगे ले लो" । गुडिया ने अपने पसंद के पटाखे लिए और फिर मैं उसे मिठाई की दुकान पर ले गया वहाँ मैंने उसे भरपेट मिठाई खिलाई और कुछ मिठाईयाँ घर के लिए भी दे दी ।

इस घटना का वर्णन करने का उद्देश्य अपनी उदारता प्रदर्शित करना नहीं बल्कि इसके बाद मुझे जो अभूतपूर्व आनंद मिला उसे साझा करना है । मुझे ऐसा लगा जैसे आज जैसी दीपावली मैंने कभी मनाई ही नहीं । मैंने मन ही मन गुडिया को धन्यवाद दिया कि उसके कारण मुझे दीपावली जैसे त्यौहार की सार्थकता समझ में आई ।

* * * * * * * *

आध्यात्मिक जीवन

(सुश्मिता सोनजे)
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (मा.सं.)

यहाँ आध्यात्मिक जीवन कहने का मतलब पूजा – पाठ या मंदिर, मस्जिद, गुरुद्वारा या चर्च में जाकर प्रार्थना करना नहीं है और ना ही अपने इष्ट के सामने बैठकर अराधना करना है बल्कि आध्यात्मिक जीवन का अर्थ अपने आपको, अपनी आत्मा को जानना है । प्रत्येक मनुष्य स्वभावतः नेक होता है । परंतु छोटी – छोटी लालसाएं उसे मनुष्यता की श्रेणी से नीचे गिरा देती है । लोभ एवं अपने लाभ के चक्कर में पड़कर वह हर उस चीज को उचित ठहराने लगता है जिसे मानवीय आचरण के विरुद्ध माना जा सकता है। मनुष्य के पतन की शुरुआत यही से होने लगती है । अपना घर, अपने बच्चे, अपने लोग की परिभाषा में वह विशाल मानव समाज की उपेक्षा करने लगता है ।

तथाकथित आध्यात्मिक लोग ईश्वर से इसलिए डरते हैं कि उन्हें ईश्वर से अपना काम निकालना होता है । वे इष्ट की अराधना इसलिए नहीं करते क्योंकि उन्हें ऐसा करना अच्छा लगता है बल्कि वे ऐसा इसलिए करते हैं कि उनके सारे बिगड़े काम आसानी से हो जाए । स्वामी विवेकानंद ने ऐसे आध्यात्मिक लोगों से उन नास्तिकों को भला माना है जो अपने काम के लिए ईश्वर की सत्ता का इस्तेमाल नहीं करते । यह अनायास नहीं है कि स्वामी विवेकानंद ने दरिद्र नारायण की पूजा को सर्वश्रेष्ठ पूजा माना है । उनका स्पष्ट मानना था कि अगर तुमने दरिद्र का पेट भर दिया तो समझों तुमने आज अपनी पूजा कर ली है ।

आध्यात्मिक जीवन में करुणा, संवेदना और परोपकार का समावेश होता है । अगर सचमुच कोई आध्यात्मिक है तो उसमें ये सभी गुण अनायास भाव से विराजमान होंगे । आध्यात्मिक व्यक्ति सभी धर्मो का समान आदर करने वाला होता है जिसके कारण उसकी संवेदना एवं करुणा का विकास समस्त प्राणियों पर समान भाव से होती है । उदाहरण के लिए अगर किसी वृक्ष को काटा जाए या किसी पौधे को क्षति पहुँचाई जाए या फिर किसी जानवर या किसी मनुष्य को पीड़ा पहुँचे – इन सभी स्थितियों में आध्यात्मिक व्यक्ति को समान कष्ट होगा क्योंकि उसकी करुणा मानव एवं मानवेत्तर में फर्क नहीं करती ।

तात्पर्य यह है कि आध्यात्मिक व्यक्ति पूर्णतः मनुष्य होता है । आज के समय में मनुष्य जाति को ऐसी ही आध्यात्मिकता की आवश्यकता है जो दूसरे की पीड़ा को समझ सके । तुलसीदास ने लिखा भी है : -

परहित सरस धर्म नहीं भाई,
परपीड़ा सम नहीं अधमाई ॥

अर्थात दूसरे का हित करना सबसे बड़ा धर्म है एवं दूसरे को कष्ट या पीड़ा देना सबसे बड़ा अधर्म है । अगर हम आध्यात्मिकता की इस परिभाषा को समझते हुए उसे अपने जीवन में उतार लें तो विश्व की सारी समस्या हल हो जाएगी ।

* * * * * * * *

सोवियत संघ की 588 वीं महिला बमवर्षक रेजिमेंट

(महिला दिवस 2025 के अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक के संबोधन का अंश)

विश्व इतिहास में जब भी बहादुरी और साहसिक कार्यों की चर्चा होगी उसमें दूसरे विश्व युद्ध के दौरान सोवियत संघ के बहादुर महिला बमवर्षक उड़ान दल 588 का जिक्र अवश्य होगा | यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि सोवियत संघ को दूसरे विश्व युद्ध में मिली जीत में इन महिला उड़ान दलों की बहुत महत्वपूर्ण भूमिका थी|

दूसरे विश्व युद्ध में जर्मनी का पलड़ा सोवियत संघ पर काफी भारी पड़ा था और जर्मन सेना ने सोवियत संघ के एक बड़े भू– भाग पर अपना आधिपत्य जमा लिया था| युद्ध की विभीषिका से पूरा सोवियत संघ कराह रहा था और उसका पुरुष सैन्य बल का एक बड़ा खेप युद्ध की भेट चढ़ गया था |एडॉल्फ हिटलर ने जून 1941 में सोवियत संघ पर अपना बड़े पैमाने पर आक्रमण, "ऑपरेशन बारब्रोसा" शुरु किया था। शरद ऋतु तक जर्मन मास्को पर दबाव बना रहे थे और लेनिनग्राद घेराबंदी में था| कुल मिलाकर लाल सेना संघर्ष कर रही थी और सोवियत सेना हताश थी।

ऐसी स्थिति में सोवियत संघ की महिलाओं के पास करने या मरने जैसी स्थिति पैदा हो गई थी | परंतु सोवियत संघ में महिला लड़ाकाओं के दल को केवल पुरुष सैनिकों की जमीनी मदद की अनुमति थी | ऐसे में वे केवल नाम मात्र का सैन्य योगदान कर पा रही थी युद्ध में सोवियत लड़ाकू महिलाएँ विमानों और गोला-बारुद को केवल स्थानांतरित करने में मदद करती थी जिसके बाद पुरुष योद्धा युद्ध में मोर्चा संभालते थे । परंतु हिटलर के विध्वंशक एवं अतिक्रमणाकारी चेष्टाओं के कारण सोवियत नेताओं को सोवियत महिला लड़ाकाओं को युद्ध में अग्रिम पंक्ति में मोर्चा संभालने की नीति अपनाने पर विवश कर दिया|

सोवियत संघ ने नाजियों को युद्ध में परास्त करने के उद्देश्य से एक महिला बमवर्ष लड़ाकू दल का गठन किया जिसका नेतृत्व स्क्वाड्रन मरीना रस्कोवा ने किया था| इस महिला बमवर्षक उड़ान दल के गठन का विचार स्क्वाड्रन मरीना रस्कोवा का ही था | परंतु इसके लिए उनके पास पर्याप्त संसाधन नहीं थे | इसके बावजूद सोवियत संघ की इस बहादुर स्क्वाड्रन ने हार नहीं मानी और अपने अद्‌भुत युद्ध कौशल और रणनीति से महिला 588 वीं नाइट बॉम्बर रेजिमेंट का गठन किया|

स्क्वाड्रन मरीना रस्कोवा जिन्हें "सोवियत अमेलिया इरहार्ट" के नाम से जाना जाता था - जो न केवल सोवियत वायु सेना में पहली महिला नाविक के रुप में प्रसिद्ध थीं, बल्कि अपनी कई लंबी दूरी की रिकॉर्ड उड़ान के लिए भी प्रसिद्ध थीं। उन्हें सोवियत संघ के विभिन्न क्षेत्रों से महिलाओं के पत्र मिल रहे थे जो दूसरे विश्व युद्ध में बढ़ – चढ़ कर शामिल होना चाहती थीं। जबकि उन्हें सहायक भूमिकाओं में भाग लेने की अनुमति दी गई थी|कई महिलाएं ऐसी भी थीं जो गनर और पायलट बनना चाहती थीं औरअपने दम पर उड़ान भरना चाहती थीं। कई महिलाओं ने अपने भाइयों या प्रियजनों को खो दिया था, या अपने घरों और गांवों को तबाह होते देखा था। उनके भीतर नाजियों से बदला लेने की आग भड़क रही थी|

ऐसी परिस्थिति में एक अवसर देखकर, रस्कोवा ने सोवियत तानाशाह जोसेफ स्टालिन से एक महिला लड़ाकू स्क्वाड्रन बनाने की अनुमति मांगी। 8अक्टूबर, 1941 को स्टालिन ने तीन महिला वायुसेना इकाइयों को

Celebrating 100 Years India Security Press, Nashik Road 1925-2025
सुरक्षित मुद्रण हमारी पहचान, भारत प्रतिभूति मुद्रणालय राष्ट्र की शान।

तैनात करने का आदेश दिया। आदेश था कि महिलाएँ न केवल मिशन उड़ाएंगी और बम गिराएंगी, बल्कि वे जवाबी गोलीबारी भी करेंगी -जिससे सोवियत संघ पहला ऐसा देश बन गया जिसने आधिकारिक तौर पर महिलाओं को इसमें शामिल होने की अनुमति दी।

रस्कोवा ने जल्दी ही अपनी टीमों को भरना शुरु कर दिया। 2,000 से ज़्यादा आवेदनों में से, लगभग 400 महिलाओं का चयन किया। ज़्यादातर छात्राएँ थीं,जिनकी उम्र 17 से 26 के बीच थी।चुने गए लोग स्टेलिनग्राद के उत्तर में स्थित एक छोटे से शहर एंगेल्स चले गए, जहाँ उन्होंने एंगेल्स स्कूल ऑफ़ एविएशन में प्रशिक्षण शुरु किया। उन्हें बहुत ही कम समय में प्रशिक्षण प्रदान किया गया | इन महिला प्रशिक्षार्थियों से उनसे कुछ ही महीनों में वह सब सीखने की उम्मीद की गई जिसे समझने में अधिकांश सैनिकों को कई साल लग जाते हैं। प्रत्येक महिला योद्धा को पायलट, ग्राउंड क्रू और मेंटनेंस के रुप में प्रशिक्षित और किया गया था |

अपनी कड़ी शिक्षा के अलावा, महिलाओं को कुछ पुरुष सैन्य कर्मियों के संदेह का सामना करना पड़ा जिनका मानना था कि वे युद्ध में कोई योगदान नहीं दे पाएंगी । रास्कोवा ने अपनी महिलाओं को इन दृष्टिकोणों के लिए तैयार करने की पूरी कोशिश की, लेकिन फिर भी उन्हें यौन उत्पीड़न, लंबी रातें और भीषण परिस्थितियों का सामना करना पड़ा। लेखक, स्टीव प्रॉज़ कहते है "पुरुषों को 'छोटी लड़कियों' का फ्रंट लाइन पर जाना पसंद नहीं था जिनके अनुसार यह पुरुषों का काम था।"

588 वें रेजिमेंट का पहला मिशन, 28 जून, 1942 को आरंभ हुआ जिसमेंआक्रमणकारी नाजी सेना के मुख्यालय पर सफलतापूर्वक निशाना साधा गया। बाद में युद्ध समाप्ति तक अग्रणी महिला 588 वीं नाइट बॉम्बर रेजिमेंट ने नाजियों के ठिकानों पर लगभग 23,000 टन से अधिक बम गिराए और दूसरा विश्व युद्ध जीतने में सोवियत की ओर से एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

588 वें रेजिमेंट की महिला बमवर्षक लड़ाका दल की महिला योद्धाएँ अंधेरे की आड़ में खुले हुए प्लाईवुड के बाइप्लेन को उड़ाती थी जिनका इस्तेमाल सोवियत संघ के खेतों में फसलों के लिए पानी छिड़कने या अन्य कृषि कार्यों में किया जाता था । इन प्लाइबुड के बाइप्लेन में ना तो बंद कॉकपिट होता था और ना ही प्रकाश व्यवस्था और ना ही रडार या दिशा सूचक यंत्र| इतना ही नहीं, यह जमीन से बहुत कम ऊंचाई पर उड सकते थे | पटकथा "द नाइट विच" जो अल्पज्ञात महिला स्क्वाड्रन का एक गैर-काल्पनिक विवरण है,के लेखक, स्टीव प्रॉज़ लिखते हैं कि"विमान इतने छोटे थे कि रडार या इन्फ्रारेड लोकेटर पर दिखाई नहीं देते थे। उन्होंने कभी रेडियो का इस्तेमाल नहीं किया, इसलिए रेडियो लोकेटर भी उन्हें पकड़ नहीं पाए। वे मूल रुप से भूत की तरह ही थी ।उन्होंने हवा में गोलियों और ठंड का सामना किया |"

जर्मनों ने 588 वें रेजिमेंट की महिला बमवर्षक लड़ाका दल की महिला योद्धाओं को नैच थेक्सन या "रात की चुड़ैलें"(नाईट विचेस) का उपनाम दिया क्योंकि उनके लकड़ी के विमानों से निकलने वाली आवाज़ झाड़ू की आवाज़ जैसी थी।यह आवाज़ जर्मनों के लिए एकमात्र चेतावनी थी। नाज़ियों द्वारा उनमें इतना डर और नफरत थी कि कोई भी जर्मन एयरमैन जो 588 वें रेजिमेंट की महिला बमवर्षक लड़ाका दल की महिला योद्धा को मार गिराता तो उसे स्वत: ही प्रतिष्ठित आयरन क्रॉस पदक से सम्मानित किया जाता था ।

दूसरों की मिली और बची हुई वस्तुओं से काम चलाना :-

युद्ध के दौरान महिला पायलटों के अचानक गठन होने के कारण सोवियत सेना ने उन्हें बहुत कम संसाधन दिए। महिला पायलटों को पुरुष सैनिकों की हाथ से बनाई गई वर्दी दी गई, जिसमें बड़े आकार के जूते भी शामिल थे। लेखक स्टीव प्रॉज़ कहते है "उन्हें अपने बिस्तर को फाड़कर अपने जूतों में ठूंसना पड़ा, ताकि वे फिट हो सकें।" उनके उपकरण भी बहुत बेहतर नहीं थे। सेना ने उन्हें पुराने पोलिकारपोव पो-२ बाइप्लेन,1920 के दशक के क्रॉप-डस्टर दिए थे, जिनका इस्तेमाल प्रशिक्षण वाहनों के रुप में किया जाता था। ये हल्के दो-सीटर, खुले

कॉकपिट वाले विमान कभी भी युद्ध के लिए नहीं बने थे। स्टीव प्रॉज़ आगे कहते है, "यह पंखों वाले ताबूत जैसा था।" प्लाईवुड से बने और कैनवास से ढके इस विमान में मौसम से लगभग कोई सुरक्षा नहीं थी। रात में उड़ान भरते समय पायलटों को बर्फीले तापमान, हवा और शीतदंश का सामना करना पड़ता था। कठोर सोवियत सर्दियों में, विमान इतने ठंडे हो जाते थे कि उन्हें छूने से ही खुली त्वचा फट जाती थी।

विमानों की सीमित भार क्षमता और सेना के सीमित धन के कारण, महिला बमवर्षक पायलटों के पास अन्य "विलासिता" की वस्तुओं का भी अभाव था, जो उनके पुरुष समकक्षों के पास थीं। पैराशूट (जो ले जाने के लिए बहुत भारी थे), रडार, बंदूकें और रेडियो के बजाय, उन्हें रुलर, स्टॉपवॉच, फ्लैशलाइट, पेंसिल, नक्शे और कम्पास जैसे बुनियादी उपकरणों का उपयोग करने के लिए मजबूर होना पड़ा।

महिला बमवर्षक पायलटों के पास लड़ाई के लिए इस्तेमाल होने वाले पुराने विमानों में कुछ अच्छी बाते भी थीं। उनकी अधिकतम गति नाजी विमानों की स्टॉल गति से धीमी थी, जिसका मतलब था कि ये लकड़ी के विमान दुश्मन की तुलना में तेजी से युद्धाभ्यास कर सकते थे, जिससे उन्हें निशाना बनाना मुश्किल हो जाता था। वह अधिकांश स्थानों से आसानी से उड़ान भर सकते थे और उतर सकते थे।

लेकिन इनका नकारात्मक पक्ष यह भी था कि दुश्मन की गोलीबारी के सामने आने पर, पायलटों को अपने विमानों को गोता लगाकर झुकना पड़ता था क्योंकि किसी भी विमान में रक्षा के लिए अलग से कोई गोला-बारुद नहीं होता था। इसलिए अगर उन्हें ट्रेसर बुलेट से मारा जाता, जिसमें पायरोटेक्निक चार्ज होता है, तो उनके लकड़ी के विमान जलकर राख हो जाते थे।

युद्ध रणनीति :-

588 वें रेजिमेंट के पास उपलब्ध विमानों का प्रयोग केवल रात में किया जाता था क्योंकि उनमें लाईट नहीं होती थी और वे बहुत ऊंचाई तक नहीं उड सकते थे| पोलिकारपोव में एक-एक बम हर विंग के नीचे लगाया जाता था और इस तरह महिला बमवर्षक दल के योद्धा एक बार में सिर्फ़ दो बम ले जा सकतीथी। जर्मन फ्रंट लाइन में महत्वपूर्ण सेंध लगाने के लिए 588 वें रेजिमेंट ने एक रात में बयालीस क्रू भेजे। इस तरह 588 वें रेजिमेंट ने हर रात आठ से 18 मिशनों को अंजाम दिया था और बीच-बीच में फिर से हथियारबंद होने के लिए वापस उड़ता था। बमों के वजन के कारण उन्हें कम ऊंचाई पर उड़ना पड़ता था, जिससे वे ज़्यादा आसान लक्ष्य बन जाते थे - इसलिए उनके मिशन सिर्फ़ रात में ही होते थे।

588 वें रेजिमेंट का प्लाईवुड का विमान, जिनमें से प्रत्येक में आगे एक पायलट और पीछे एक क्रू मेम्बर होता था, यात्रा करते थे। पहले विमान बेट (bait) के रुप में जाते थे, जर्मन स्पॉटलाइट को आकर्षित करते थे, जो आवश्यक प्रकाश प्रदान करते थे। इन विमानों के पास, जिनके पास खुद को बचाने के लिए शायद ही कभी गोला-बारुद होता था, लक्षित लक्ष्य को रोशन करने के लिए एक फ्लेयर छोड़ते थे। आखिरी विमान अपने इंजन को निष्क्रिय कर देता था और अंधेरे में बमबारी वाले क्षेत्र में सरक जाता था। यह "स्टील्थ मोड" था जिसने उनकी खास चुड़ैल की झाड़ू जैसी आवाज़ पैदा की थी।

नाइट विच 12 आज्ञाओं (Commandments) का पालन करती थीं। पहली आज्ञा थी "गर्व करो - तुम एक महिला हो।" जर्मनों को मारना उनका काम था, लेकिन अपने खाली समय में ये उड़ाने वाली वीरांगनाएँ सुई का काम, पैचवर्क करती थी, अपने विमानों को सजाती थी और नृत्य करती थी। उन्होंने नेविगेशन के लिए इस्तेमाल की जाने वाली पेंसिलों को आईलाइनर के रुप में भी इस्तेमाल किया।

उनकी आखिरी उड़ान 4 मई, 1945 को हुई थी - जब नाइट विच बर्लिन से 60 किलोमीटर (लगभग 37 मील) के भीतर उड़ी थी। तीन दिन बाद, जर्मनी ने आधिकारिक तौर पर आत्मसमर्पण कर दिया।

* * * * * * * *

आंतरिक शांति एवं समृद्धि के सूत्र

अर्पित धवन,
उप महाप्रबंधक (मा.सं.)

हम सभी सुख, समृद्धि और शांति चाहते हैं, लेकिन बहुत कम लोगों को यह ज्ञात होता है कि शांति कैसे प्राप्त किया जाए। ठीक वैसे ही जैसे कि बहुत कम लोगों को ज्ञात होता है कि धन कैसे कमाया जाता है। यहाँ परमावश्यक आंतरिक शांति पाने के कुछ उपाय बताएं जा रहे हैं:-

1. स्वयं को समय दीजिए: - हम हमेशा अपनी दैनिक गतिविधियों में तल्लीन रहते हैं और केवल अधिक से अधिक जानकारी इकट्ठा करने में खोए रहते हैं और जरुरी चीजों पर चिन्तन एवं मनन के लिए समय नहीं दे पाते। दिन के अंत में हमें उदासी एवं थकान का अनुभव होता है।

याद रखिए, प्रतिदिन नीरव शान्ति के कुछ पल सर्जनात्मकता के स्त्रोत होते हैं। शांति शरीर और मन को स्वस्थ कर देती है तथा व्यक्ति को आंतरिक एवं वाह्य रुप से संतुलित एवं गंभीर बना देती है। व्यक्तित्व में संतुलन के लिए कार्य के दौरान थोड़े समय के लिए जहाँ हैं वहाँ शांत बैठ जाएं और आँखों को बंद कर लें। इसके बाद स्वयं को हृदय की गुफा में बैठे होने का अनुभव करें और पूरे विश्व को भूल जाएं।

जीवन की गुणवत्ता को बनाएं रखने एवं उसे उन्नत करने के लिए स्वयं को कुछ समय अवश्य दें।

2.जीवन की नश्वरता को जाने: - इस जीवन की नश्वरता को देखें और इसे महसूस करें। लाखों वर्ष गुजर गए और लाखों वर्ष पुनः आएंगे। इस विश्व में कुछ भी शाश्वत नहीं है। इस पूर्ण विश्व में आपका जीवन क्या है? सागर की एक बूंद भी नहीं। अपनी आँखें खोलिए और अपने आपसे पुछिए कि "मैं कौन हूँ? मैं इस ग्रह पर किसलिए आया हूँ? मेरे जीवन की समय सीमा क्या हैं?" इन प्रश्नों के उत्तर खोजने से आपके अंतस में ज्ञान का उदय होगा और आप छोटी-छोटी बातों की चिंता करना छोड़ देंगे। आपके भीतर से सभी तरह की लघुता का भाव निकल जायेगा और आप आपने जीवन का प्रत्येक पल खुल कर जिएंगे। जब आप अपने जीवन को विस्तृत फलक पर देखेंगे तो आपके जीवन की गुणवत्ता अपने आप बढ़ जाएगी।

3. आचरण में सौम्यता एवं दयालुता लाएं :- यह ठान लीजिए कि इस विश्व को रहने के लिए एक बेहतर जगह बनानी हैं। अपने आचरण में दया का भाव रखें एवं बदले में किसी भी वस्तु की प्राप्ति का भाव ना रखें। याद रखिए केवल सेवा भाव ही आपके जीवन में संतुष्टि लाने में सक्षम है। यह आपको मानवता से,विश्व से और अंततः ईश्वर से जुडाव का भाव लाएगा। आपने कभी अनुभव किया होगा कि जब आप किसी जरुरतमंद व्यक्ति की सहायता करते हैं तो आपको आंतरिक प्रसन्नता महसूस हुई होगी क्योंकि दया, प्रेम तथा शांति का भाव आपकी (मनुष्य) प्राकृतिक एवं स्वाभाविक आदत है।ऐसी प्राकृतिक आदतों की स्वाभाविकता बनाएं रखें ताकि

जीवन खुशनुमा एवं समृद्ध रहें ।

4. अपनी मुस्कराहट को सुलभ करें : -प्रत्येक दिन सुबह उठकर आईने में एक अच्छी मीठी मुस्कान के साथ अपने आपको देखें । किसी को भी अपनी मीठी मुस्कान छीनने का हक ना दें, फिर चाहे वह कोई व्यक्ति हो या कोई परिस्थिति । अपनी मुस्कान कायम रखें। आप जरा शांत भाव से सोचिए कि क्या हमेशा आप अपना गुस्सा लोगों को मुफ्त में देते हैं और अपनी मुस्कान को बड़ी मुश्किल से खिलने देते हैं । शायद बहुत से लोगों का जवाब हाँ में होगा। अब पुनः सोचिए कि क्या आपकी मुस्कान इतनी महँगी है कि उसे आप मुफ्त में नहीं दे सकते। जी नहीं, बिलकुल नहीं । अपनी मुस्कान को सुलभ बनाइये और अपने क्रोध को महँगा कीजिए ताकि महँगी चीजों से दूरी बनी रहे ।

5.ध्यान साधना को जीवन में शामिल कीजिए :-जब हम अपने जीवन में बड़ी महत्वकांक्षा को पालते हैं या उसे आश्रय देते हैं तो वह हमें तनाव एवं बेचैनी की ओर ले जाता है । परंतु धैर्य एवं शांति से आत्मनिरीक्षण एवं चिन्तन करने पर महत्वकांक्षाओं की थोथी सच्चाई उजागर हो जाती है । महत्वकांक्षाएं होनी चाहिए परंतु उस पर विचार करना चाहिए कि वे हमें किस पथ पर अग्रसर करती हैं। ध्यान साधना के माध्यम से हम महत्वकांक्षाओं के जंगल में भटकने से मुक्त हो जाते हैं और जो जीवन के लिए अत्यंत आवश्यक होता है, उस पर केंद्रित हो जाते हैं । इस प्रकार ध्यान साधना एवं चिन्तन व्यक्ति के लिए पथ प्रदर्शक एवं दिशा सूचक होता है । याद रखिए अगर आप अपनी गतिविधियों में अधिक सक्रिय एवं केंद्रित होना चाहते हैं तो ध्यान साधना आपके लिए रामबाण औषधि बन जाएगी ।

ध्यान साधना क्या है :- विचार शून्य मस्तिष्क की दशा ही ध्यान साधना है अर्थात जब आपके भीतर किसी भी तरह का कोई भी भाव या विचार ना हो, आप पूरी तरह आवेग शून्य हो, ध्यान साधना है । दूसरे शब्दों में चित्त एवं मस्तिष्क का शांत होना ध्यान साधना है ।

ध्यान साधना की कई दशाएं हैं जैसे - मन में पूर्वाभास तथा हिचकिचाहट नहीं होना, मस्तिष्क का शांत होना एवं हृदय में शान्ति और आनंद की धारा प्रवाहित होना आदि ध्यान साधना के अंश या सूचकहैं ।

6. हमेशा विद्यार्थी की तरह रहना: - जान लीजिए कि आप सदा के लिए विद्यार्थी हैं । किसी को भी कम मत समझिए । विश्व के किसी भी कोने से आपके पास ज्ञान आ सकता है और प्रत्येक व्यक्ति एवं प्रत्येक प्रसंग आपको शिक्षा दे सकता है बशर्ते आपमें सीखने का मादा हो । पूरा विश्व आपका गुरु बन सकता है । जब आप हमेशा कुछ सीखने की ललक बनाएं रखेंगे तब आप दूसरों को कम करके आंकना छोड़ देंगे । नम्रता से आपके जीवन में नई ऊर्जा का संचार होगा और आपके जीवन तथा मनुष्यता का स्तर ऊँचा उठता चला जायेगा ।

7. आस्थावान बनिए :- हमारा प्रेम, आस्था और विश्वास की गहराई तक होनी चाहिए । जिस दिन ऐसा होगा उस दिन सब कुछ अपने आप बदल जाएगा । जब आप अनुभव करेंगे कि मुझ पर ईश्वर की असीम अनुकंपा है तो यह भावना आपको किसी भी क्षेत्र में सहज बना देता है और आपकी आंतरिक प्रतिभा खिल उठती है । जब आपको अनुभूति होगी कि मुझे ईश्वरीय आशीर्वाद प्राप्त है तो आपकी सभी शिकायतें, भनभनाहट, असुरक्षा की भावनाएं अदृश्य हो जाएगी और आप कृतज्ञ, संतुष्ट एवं शांति से भर जाएंगे। फिर आप जो भी करेंगे उसमें आपका सर्वश्रेष्ठ निकल कर बाहर आयेगा अर्थात आपकी पूर्णता प्रकट हो जायेगी । ********

सिध्दि

रवि आसुदानी
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

तब स्वामी रामकृष्ण परमहंस दक्षिणेश्वर मंदिर के पुरोहित थे। उनकी बढ़ती ख्याति से कई योगी-संत उनसे ईर्ष्या करने लगे थे। एक दिन एक योगी उन्हें नीचा दिखाने के लिए कहने लगा, 'तुम सचमुच परमहंस हो तो अपना चमत्कार दिखाओ ।'रामकृष्ण ने बड़ी सहजता से जवाब दिया, 'नहीं मित्र, मैं तो एक साधारण-सा मनुष्य हूं। मेरे पास कोई चमत्कारिक शक्ति नहीं है। 'योगी उनकी बात सुनकर भड़क उठा। उसे तो रामकृष्ण को किसी भी तरह अपमानित करना था।

इस पर योगी ने सीना फुलाते हुए कहा, 'मैने पूरे 18 वर्षो तक हिमालय में घोर तपस्या की है, तब कहीं जाकर गंगा पर चलने की शक्ति प्राप्त हुई है।' रामकृष्ण ने योगी के अहंकार को महसूस कर लिया और उन्होंने कहा, 'मैं तो पानी पर नहीं चल सकता।' परमहंस ने विनम्र भाव से आगे कहा, 'मित्र ! 18 साल बेकार कर दिए। मुझे गंगा नदी के उस पार जाना होता है, तो मैं मांझी को आवाज देता हूँ। वह सिर्फ दो पैसे लेता है और नदी पार करा देता है। जरा सोचो, तुमने पानी पर चलने की जो सिद्धि प्राप्त की है, उसकी कीमत दो पैसे से अधिक की नहीं !'योगी निरुत्तर हो गया। उसकी नजरें नीची हो गईं।

परमहंस ने उसे समझाया, ''सिद्धि पर गर्व नहीं करना चाहिए। योगी का धर्म है कि अपनी सिद्धि केवल परोपकार के लिए इस्तेमाल करे, अहंकार के लिए नहीं।''

* * * * * * * *

काहे मनुज तू क्यों भागे

सुमति हेमंत टापसे
स्टॉफ नर्स

काहे मनुज तू क्यों भागे
पर पराई रित हो भावे
अपनी कस्तुरी देख न पावे
भिर-भिर जो अखियाँ देखे
सब कुछ पाकर दूर जावे
अपने संस्कृति का आदर न दिखावे
सब ज्ञान तेरे देश में विपुल
कर अपना उद्देश्य सफल
काहे मनुज तू क्यू भागे
पर पराई रित जो भावे
वीर माता वीर पिता
पुत्र ही वीर पुत्री ही वीर
है ऊँचा सम्मान हमारे
अपने देश को हम ही सँवारे
स्व का मूलाधार मत छोड़ो
अपने श्रेष्ठ सभ्यता को अनुसरो
अंतर्मन का पेहराव है सबको प्यारा
सादगी से पूर्ण इतिहास हमारा
बनाया सभी महापुरुषों ने
इतिहास को स्वयं रचाया उन्होंने
काहे मनुज तू क्यों भागे
रित पराई तुझे क्यों भावे?

* * * * * * * *

वास्तविक खुशी

गुंजन सिंगला
प्रबंधक (वि. एवं ले.)

वर्तमान समय में पूरा विश्व बाजारवाद एवं वैश्विक पूंजी के चक्कर में खुद को सही साबित करने की होड़ में लगा हुआ है । जितनी बड़ी महत्वकांक्षा उतना ही बड़ा तनाव । आज जीवन महज आपा – धापी का नाम बनकर रह गया है । विश्व के सभी मानव अपने सपनों को पूरा करने की आपा – धापी में लगातार रेस दौड़ रहें हैं । एक सपना अभी पूरा हुआ नहीं कि दूसरा सपना जन्म ले लेता है । सपनों को पूरा करते– करते एक दिन पता चलता है कि जिन सपनों के पीछे हम जीवन भर भागते रहें वे तो मृग मरीचिका थी । इस मृग मरीचिका ने हमें इतना दौड़ाया कि हम जीवन का वास्तविक आनंद उठाना ही भूल गये ।सुबह का उगता हुआ सूरज हमें देखें कितना समय बीत गया । रात को तारे और चंद्रमा को देखे तो और भी अधिक दिन हो गए । कंक्रीट के जंगलों में रहते हुए हमारे भीतर वास्तविक जंगल का बोध ही गायब हो गया । खेतों और फसलों की चर्चा हमने केवल जीडीपी ग्रोथ की चर्चा के रुप में टीवी पर देखा । असली जीवन में हम ना कभी खेत में गए और ना ही किसी फसल को हाथ से छू कर देखा । पता भी नहीं कि आलू,प्याज अपने मूल रुप में खेतों में कैसा दिखता है । चावल, गेहूँ और दाल की भी यही स्थिति है। आज सभी का सपना एक फ्लैट,जमीन और गाड़ी खरीदने पर आकर टिक जाता है। फ्लैट खरीदने के बाद हम उसे कृत्रिम पौधों से सजाते हैं । कृत्रिम झालर लगाते हैं । एक्वेरियम रखते हैं । कहीं ना कहीं हम इसे इको – फ्रेंडली बनाने का प्रयास करते हैं । दरअसल हमारे अंदर कहीं ना कहीं प्राकृतिकअवयव खुदबुदाते रहते हैं । वे हमें प्रेरित करते हैं कि आओ कुदरत के खुले आंगन में आकर नैसर्गिक रुप से प्रकृति का आनंद उठाओ । परंतु सुबह की नींद हमें इन खुशियों से कहीं अधिक प्यारी लगती है । तभी तो हम यह जानते हुए भी कि सुबह की सैर स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभदायक है, हम अपने बेड पर चादर लपेटे लुढ़के होते हैं । खैर, आपने महसूस किया होगा कि जिस दिन आप भूले – भटके कभी सुबह की सैर की होगी उस दिन आप अधिक स्फूर्ति महसूस करते होंगे । जिस दिन आप बच्चों के साथ खेले होंगे उस दिन आप अधिक खुलकर हँसे होंगे। जिस दिन आपने किसी की सहायता की होगी उस दिन आप अंदर से अधिक प्रसन्न हुए होंगे । जिस दिन आपने अपनी पत्नी के घरेलू कार्यों में हाथ बटाया होगा उस दिन आप अधिक संतुष्ट हुए होगे आदि-आदि। ये सारे कार्य आपकी वास्तविक खुशी के कारक हैं । क्या आपने कभी ऐसा महसूस किया कि आपने रेस्टोरेंट में खाया खाया, नये कपडे खरीदे या नई गाड़ी खरीदी तो आपको वैसी ही खुशी प्राप्त हुई जैसा कि किसी की मदद करने, बच्चों के साथ खेलने, पत्नी का सहायक बनने में प्राप्त किया । आप देखेंगे कि इन दोनों प्रकार की खुशी में एक मूलभूत अंतर है । भौतिक उपलब्धि प्राप्त करने का सुख और आंतरिक खुशी प्राप्त करने के सुख में बहुत अंतर होता है । आपने यह भी महसूस किया होगा कि किसी की मदद करने के बाद आप आंतरिक रुप से काफी गदगद महसूस करते हैं । यह भाव आपके चेहरे पर एक अदम्य खुशी के रुप में झलकती है । इसमें कोई संदेह नहीं कि नई गाड़ी खरीदने पर भी आप खुश हुए होंगे परंतु उसकी खुशी आपके भीतर नहीं पैठती है ।यही छद्म खुशी और वास्तविक खुशी का अंतर होता है । जिस दिन हम इसे समझ लेगें उस दिन हम सच में समृद्ध हो जाएंगे । ********

सुमित्रानंदन पंत : व्यक्तित्व एवं कृतित्व

एस. एस. निकुंब
वरिष्ठ पर्यवेक्षक (राजभाषा)

हिन्दी साहित्य सुमित्रानंदन पंत में छायावादी युग के चार प्रमुख स्तंभों में से एक हैं। बीसवीं सदी का पूर्वार्द्ध छायावादी कवियों का उत्थान काल था। उसी समय सुमित्रानंदन पंत उस नये युग के प्रवर्तक के रुप में हिन्दी साहित्य में अभिहित हुए। इस युग को जयशंकर प्रसाद, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला और रामकुमार वर्मा जैसे छायावादी प्रकृति उपासक-सौन्दर्य पूजक कवियों का युग कहा जाता है। उनका जन्म कौसानी, बागेश्वर में हुआ था। झरना, बर्फ, पुष्प, लता, भ्रमर-गुंजन, उषा-किरण, शीतल पवन, तारों की चुनरी ओढ़े गगन से उतरती संध्या ये सब तो सहज रुप से काव्य का उपादान बने। निसर्ग के उपादानों का प्रतीक एवं बिम्ब के रुप में प्रयोग उनके काव्य की विशेषता रही। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षण का केंद्र बिंदु था। गौर वर्ण, सुंदर सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल, सुगठित शारीरिक सौष्ठव उन्हें सभी से अलग करता था।

जीवन परिचय :-

सुमित्रानन्दन पन्त का जन्म उत्तराखण्ड में कुमायूँ की पहाड़ियों पर बसे बागेश्वर ज़िले के कौसानी नामक ग्राम में 20 मई 1900 को हुआ। वह गंगादत्त पंत की आठवीं संतान थे।जन्म के छह घंटे बाद ही उनकी माँ का निधन हो गया। उनका नाम गोंसाई(गुसाई) दत्त रखा गया। उनका लालन-पालन उनकी दादी ने किया। गुसाई दत्त की प्रारंभिक शिक्षा-दीक्षा अल्मोड़ा में हुई। 1910 में शिक्षा प्राप्त करने श्री सुमित्रानन्दन पन्त गवर्नमेंट हाईस्कूल अल्मोड़ा गये। यहीं उन्होंने अपना नाम गोसाईं दत्त से बदलकर सुमित्रानंदन पंत रख लिया। 1918 में वे मँझले भाई के साथ काशी गये और क्वींस कॉलेज में पढ़ने लगे। वहाँ से हाईस्कूल परीक्षा उत्तीर्ण कर म्योर कालेज में पढ़ने के लिए इलाहाबाद चले गए। 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान महात्मा गांधी के भारतीयों से अंग्रेजी विद्यालयों, महाविद्यालयों, न्यायालयों एवं अन्य सरकारी कार्यालयों का बहिष्कार करने के आह्वान पर उन्होंने महाविद्यालय छोड़ दिया और घर पर ही हिन्दी, संस्कृत, बँगला और अंग्रेजी भाषा-साहित्य का अध्ययन करने लगे। इलाहाबाद में ही उनकी काव्य चेतना का विकास हुआ। कुछ वर्षों के बाद उन्हें घोर आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। कर्ज से जूझते हुए पिता का निधन हो गया। कर्ज चुकाने के लिए जमीन और घर भी बेचना पड़ा। इन्हीं परिस्थितियों में वह मार्क्सवाद की ओर उन्मुख हुए | सन् 1931 में कुँवर सुरेश सिंह के साथ कालाकांकर, प्रतापगढ़ चले गये और अनेक वर्षों तक वहीं रहे। महात्मा गाँधी के सान्निध्य में उन्हें आत्मा के प्रकाश का अनुभव हुआ। 1938 में प्रगतिशील मासिक पत्रिका 'रुपाभ' का सम्पादन किया। आगे चलकर श्री अरविन्द आश्रम की यात्रा से उनमें आध्यात्मिक चेतना का विकास हुआ। सन् 1950 से 1957 तक वे आकाशवाणी में परामर्शदाता रहे। सन् 1958 में 'युगवाणी' से 'वाणी' काव्य संग्रहों की प्रतिनिधि कविताओं का संकलन 'चिदम्बरा' प्रकाशित हुआ, जिसे उन्हें 'भारतीय ज्ञानपीठ' पुरस्कार प्राप्त हुआ। पंत जी को सन् 1960 में 'कला और बूढ़ा चाँद' काव्य संग्रह के लिए 'साहित्य अकादमी पुरस्कार' प्राप्त हुआ। उन्हें 1961 में 'पद्मभूषण' की उपाधि भी प्रदान की गई | 1964 में विशाल महाकाव्य 'लोकायतन' का प्रकाशन हुआ। कालान्तर में उनके अनेक काव्य संग्रह प्रकाशित हुए। वह जीवन-पर्यन्त रचनारत रहे। अविवाहित पंत जी के अंतस्थल में

नारी और प्रकृति के प्रति आजीवन सौन्दर्यपरक भावना रही। उनकी मृत्यु 28 दिसम्बर 1977 को हुई।

साहित्य सृजन :-

सात वर्ष की उम्र में, जब वे चौथी कक्षा में ही पढ़ रहे थे, उन्होंने कविता लिखना शुरु कर दिया था। वह एक प्रकृति प्रेमी थे। सन् 1907 से 1918 के काल को स्वयं कवि ने अपने कवि-जीवन का प्रथम चरण माना है। 1918 के आसपास तक वे हिंदी के नवीन धारा के प्रवर्तक कवि के रुप में पहचाने जाने लगे थे। बारह वर्ष की उम्र से ही उनकी रचनाएं किसी न किसी पत्रिका में छपने लगीं।इलाहाबाद में होने वाले कवि सम्मेलनों में उनके कंठ का माधुर्य प्रेक्षकों व श्रोताओं का मुख्य आकर्षण था। जितना मधुर कंठ था उतनी ही लालित्यपूर्ण-लावण्यपूर्ण कविता होती थी। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षण का केंद्र बिंदु था, गौर वर्ण, सुंदर सौम्य मुखाकृति, लंबे घुंघराले बाल, ऊंची नाजुक कवि का प्रतीक समा शारीरिक सौष्ठव उन्हें सभी से अलग मुखरित करता था। सन् 1922 में उच्छवास काव्य संग्रह प्रकाशित हुआ। हरिवंश राय बच्चन भी उनके काव्य के प्रशंसक थे। समकालीन होने के नाते एक से बढ़कर एक छायावादी कवि हिन्दी साहित्य की काव्यधारा को निसर्ग के गूढ़ तत्वों में डुबोता गये।द्विवेदी युग की काव्य नीरसता पंत जी की मधुर संगीतमय काव्य लहरी और प्रकृति सौन्दर्य से मढ़ी भाषा से सरसता में बदल गयी। वे हिन्दी छायावादी काव्यधारा के प्रवाहक ही नहीं, स्थापक भी सिद्ध हुये। उन्होंने प्रकृति सौन्दर्य का जो रसपान कराया, वह अन्य छायावादी कवि न कर सके।पंत जी की प्रथम रचना वीणा साहित्य-प्रेमियों के दिलोदिमाग पर गीत विहंग बनकर घूमती रही। स्वभाव से अति कोमल, संवेदनशील एवं मानव संवेदनाओं को मुखरित करने में कुशल पंत जी छायावाद के अग्रणी कवि माने जाने लगे। उनका काव्य संवेदनापूर्ण निसर्ग के प्रतीकों-बिम्बों से पूर्ण रहने के कारण अचेतन समझने वाली वस्तु में चेतना का संचार दिखने लगा। प्रकृति भी मानवीय संवेदना का भाव धारण कर अपनी अभिव्यक्ति में सक्षम लगने लगी। कवि पंत की संवेदना के शब्द मानव-प्रकृति और परम तत्व पर केंद्रित होने के कारण उसका समन्वय ही उनके काव्य का मूल तत्व सिद्ध हुआ।कवि सर्वचेतनावादी रचनाकार होता है। इसलिए उसके अंदर एक अव्यक्त सौन्दर्य का आकर्षण उनकी चेतना को तन्मय करने में रत था। संध्या को रानी का रुप निहार कर कह उठते थे - **तारों की चुनरी ओढ़े, उतर रही संध्या रानी।**

पंत जी कोमल सौम्य प्रकृति प्रेमी होने के कारण प्रकृति को स्वतंत्र सत्ताधीश, नारी सौष्ठव, लावण्यता देने का प्रयत्न करते। कभी सखी, कभी सुकोमल कन्या, बाल्या, प्रेयसी और सहचरी का रुप देकर प्रकृति के साथ एक-रुपता स्थापित की। डॉ. कुट्टन लिखते हैं- " पंत की काव्य दृष्टि, वीचि-विलास उषा की स्मित-किरण, ज्योर्तिमय नक्षत्र, फलों की मृदु मुस्कान, पत्रों के आनत अधर, अपलक अनंत, तत्वंगी गंगा, स्निग्ध चांदी के कगार, कल-कल, छल-छल बहती निर्झरणी, मेखलाकार पर्वत, अपार, लास्यनिरत लोल-लोल लहरें, मंजु गुंजरित मधुप की मार हम सब पर पड़ती है और कवि असीम आत्मीयता का आनंद अनुभव करता है। पंत का कवि तरुण उषा की अरुण अधखुली आंखों से बिंध जाता है।"

सन् 1934 में ज्योत्स्ना काव्य संग्रह छपा, इसके बाद ही युगान्त एवं युगवाणी का प्रकाशन हुआ। पल्लव की भी लोकप्रियता रही और प्रकृति वर्णन की चर्चा रही।विहंग कविता में पंत जी ने परमात्मा और आत्मा का अंशी-अंश संबंध प्रगट किया। आत्मा वैश्विक चिरंतन नित्य है। (ना हन्यते है) पंतजी लिखते हैं –

रिक्त होते जब-जब तरुवास
रुप धर तू नव-नव तत्काल
नित्य नादित रखता सोल्लास
विश्व के अक्षय वट की डाल।

छायावादी की दृष्टि में संपूर्ण विश्व एक ही वैश्विक चेतना से परिपूर्ण होने के नाते प्रकृति में और जड़ जगत में मानवीकरण उद्भवित हो उठता है। छायावादी की दृष्टि में सभी तत्वों में एक ही चेतना का संचार प्रतीत होता है। वह क्षण में आनंदविभोर हो उठता है तो क्षण में विषादग्रस्त। पंत जी मानवीकरण के मुख्य प्रणेता माने जाते हैं। यहाँ पर हिमालय को संबोधित करते हुये पंत जी कह उठते हैं –

शैलाधिराज का हिम पर्वत
मरकत भू आसन पर शोभित,
करती परिक्रमा शोभा नत
षड ऋतुएं नव यौवन मुकुलित।

पंत की काव्य-धारा या रचनात्मक कार्य सन् 1912 से सन् 1977 तक सतत चलता रहा। उनकी लेखनी प्रकृति सौन्दर्य, चिंतन-मनन एवं सत्यान्वेषण के मूल तत्वों पर केंद्रित रही। इतना ही नहीं, उन्होंने लोक कल्याण की भावना और ग्राम्य जीवन की सहजता पर भी लेखनी चलाई। अंत में इतना ही कहेंगे कि पंत जी सौन्दर्य शिल्पी एवं प्रकृति लालित्यकेकलाकारथे।

स्वर्ण की सुषमा जब साभार
धरा पर करती थी अभिसार
प्रसूनों के शाश्वत श्रृंगार
गूंज उठते थे बारम्बार।

उनका संपूर्ण साहित्य 'सत्यं शिवं सुन्दरम्' के आदर्शों से प्रभावित होते हुए भी समय के साथ निरंतर बदलता रहा है। जहां प्रारंभिक कविताओं में प्रकृति और सौंदर्य के रमणीय चित्र मिलते हैं वहीं दूसरे चरण की कविताओं में छायावाद की सूक्ष्म कल्पनाओं व कोमल भावनाओं के और अंतिम चरण की कविताओं में प्रगतिवाद और विचारशीलता के। उनकी सबसे बाद की कविताएं अरविंद दर्शन और मानव कल्याण की भावनाओं से ओतप्रोत हैं। पंत परंपरावादी आलोचकों और प्रगतिवादी तथा प्रयोगवादी आलोचकों के सामने कभी नहीं झुके। उन्होंने अपनी कविताओं में पूर्व मान्यताओं को नकारा नहीं। उन्होंने अपने ऊपर लगने वाले आरोपों को 'नम्र अवज्ञा' कविता के माध्यम से खारिज किया। वह कहते थे 'गा कोकिला संदेश सनातन, मानव का परिचय मानवपन।'

पुरस्कार एवं सम्मान :-

अपने कृतित्व के लिए पंत जी को विविध पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। "कला और बूढ़ा चाँद" के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, लोकायतन पर सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार एवं चिदंबरा पर इन्हें भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार प्राप्त हुआ।हिंदी साहित्य सेवा के लिए उन्हें पद्मभूषण (1961), ज्ञानपीठ (1968) साहित्य अकादमी, तथा सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार जैसे उच्च श्रेणी के सम्मानों से अलंकृत किया गया। सुमित्रानंदन पंत के नाम पर कौसानी में उनके पुराने घर को, जिसमें वह बचपन में रहा करते थे, 'सुमित्रा नंदन पंत साहित्यिक वीथिका' के नाम से एक संग्रहालय के रूप में परिवर्तित कर दिया गया है। इसमें उनके व्यक्तिगत प्रयोग की वस्तुओं जैसे चश्मा, कलम, कपड़े, कविताओं की मूल पांडुलिपियों, छायाचित्रों, पत्रों और पुरस्कारों को प्रदर्शित किया गया है। संग्रहालय में उनको मिले ज्ञानपीठ पुरस्कार का प्रशस्तिपत्र, हिंदी साहित्य सम्मेलन द्वारा मिला साहित्य वाचस्पति का प्रशस्तिपत्र भी मौजूद है। इसमें एक पुस्तकालय भी है, जिसमें उनकी व्यक्तिगत तथा उनसे संबंधित पुस्तकों का संग्रह है। कालाकांकर के कुंवर सुरेश सिंह और हरिवंश राय बच्चन से किए गये उनके पत्र व्यवहार की प्रतिलिपियां भी यहां मौजूद हैं। संग्रहालय में उनकी स्मृति में प्रत्येक वर्ष पंत व्याख्यान माला का आयोजन होता है। यहाँ से "सुमित्रानंदन पंत व्यक्तित्व और कृतित्व" नामक पुस्तक भी प्रकाशित की गई है। उनके नाम पर इलाहाबाद शहर में स्थित हाथी पार्क का नाम "सुमित्रानंदन पंत बाल उद्यान" कर दिया गया है।वर्ष 2015 में पन्त जी की याद में भारत सरकार द्वारा एक डाक-टिकट भी जारी किया गया था।

* * * * * * * *

हिंदी के राजभाषा बनने की विकास यात्रा

लोकनाथ तिवारी
प्रबंधक (राजभाषा)

किसी भी राष्ट्र की संप्रभुता के मापदंड में राजभाषा एक महत्वपूर्ण कडी है । राजभाषा का दर्जा उस भाषा को दिया जाता है जिसमें जनता द्वारा चुनी गई सरकार/सरकारें अपना काम काज करती हैं एवं जिसे देश की बहुसंख्यक जनता समझती है एवं उसमें स्वयं को अभिव्यक्ति कर पाने में सक्षम होती है ।

जैसा कि भारतीय इतिहास से पता चलता है भारत पर कई बार बाहरी आक्रमण हुए । भारत में हूण, मंगोल, चंगेज, मुगल, पुर्तगाली, ब्रिटिश आदि जातियों ने आक्रमण कर यहाँ के वैभव और संस्कृति को नुकसान पहुँचाया । इस दौरान शासन करने में उन्होंने अपनी – अपनी जुबान का प्रयोग किया । उपरोक्त जातियों में से ब्रिटिश सत्ता को छोड़ दिया जाए तो बाकी जातियों का साम्राज्य शायद ही अखिल भारत तक फैला हुआ हो । कहने का तात्पर्य यह है कि जिन जातियों ने भारत के जिस हिस्से पर शासन किया उन्होंने केवल उसी हिस्से पर अपनी जुबान का प्रयोग किया । मूलतः कर वसूली एवं बाजारों को नियंत्रित करने के दौरान उन्हें एक ऐसी भाषा की आवश्यकता होती थी जिसके द्वारा वे अपनी बात जनता तक पहुँचा सकें । इसके लिए कई बार उन्होंने स्थानीय भारतीय जनता को अपने बेडे में शामिल किया, उन्हें पद दिया और शासन को चलाने में उनकी मदद ली । इस प्रकार कई बार शासन में शामिल भारतीय स्थानीय बोली में शासन का कार्य चलाते थे और द्विभाषिया उसे मुख्य सत्ता तक संप्रेषित करता था । लेकिन मुगल एवं ब्रिटिश सता के आने के बाद भारत की अर्थव्यवस्था, संस्कृति एवं भाषा पर अधिक एवं दूरगामी प्रभाव देखने को मिलता है क्योंकि इन दोनों जातियों ने भारत में बहुत लंबे समय तक शासन किया। यह मानी हुई बात है कि जब सत्ताएं लंबी होती है तो उनका प्रभाव भी व्यापक होता है क्योंकि वे धीरे – धीरे जनता के बीच स्थापित होती जाती है । अतः उनके द्वारा लिए गए निर्णयों का बहुगामी प्रभाव पड़ता है ।

जिस समय मुगलों की सत्ता भारत पर काबिज हुई उस समय उन्होंने उर्दू को अपनी जुबान होने के कारण शासन की भाषा के रुप में इस्तेमाल किया । फलतः कुछ वर्षों तक उर्दू भारत की राजभाषा बनी रही । बाद में अंग्रेजों के आने के बाद उर्दू के साथ – साथ अंग्रेजी को राजभाषा का दर्जा दिया गया । ब्रिटिश सत्ता ने फूट डालो और शासन करों के सिद्धांत के अनुसार यह समझ लिया था कि अगर उन्हें भारत में लंबे समय तक राज करना है तो उन्हें भारतीयों की सांस्कृतिक एकता को भंग करना होगा। इसके लिए उन्होंने भाषा को एक हथियार की तरह इस्तेमाल किया । पहले उन्होंने भारतीयों के अंदर सांस्कृतिक हीनता ग्रंथि को बढ़ावा दिया । इसके अंतर्गत भारतीयों के मन में ब्रिटिश संस्कृति का हौवा खड़ा किया गया और यह बात जानबूझ कर परोसी गई कि भारतीय संस्कृति दोयम दर्जे की है एवं असंस्कृत है तथा सुसभ्य नहीं है । दूसरी तरफ अंग्रेजी भाषा एवं संस्कृति को बढ़ावा देने के लिहाज से अंग्रेजी शिक्षा एवं सभ्यता का गुणगान जैसे विषयों को प्रायोजित किया गया । इस तरह के दबाव ने भारतीयों में एक ऐसी मनोग्रंथि का निर्माण किया जिसके फलस्वरुप पश्चिम सभ्यता की श्रेष्ठता एवं भारतीय सभ्यता की हीनता की भावना का विकास हुआ । इसका

Celebrating 100 Years
1925-2025
India Security Press, Nashik Road
सुरक्षित मुद्रण हमारी पहचान,
भारत प्रतिभूति मुद्रणालय राष्ट्र की शान।

इतना दुरगामी प्रभाव पड़ा कि मुट्ठी भर अंग्रेजी सत्ता ने उस समय की 60 करोड जनता पर ना केवल एकछत्र राज किया बल्कि भविष्य की पीढ़ियों की सोच को भी प्रभावित किया ।

उसी दौरान अंग्रेजी सभ्यता एवं शिक्षा से युक्त एक ऐसी मध्य वर्गीय भारतीय पीढ़ी तैयार हुई जिसने इस षडयंत्र को भाप लिया । इस पीढ़ी में राजा रामा मोहन राय, विद्यासागर, सुकुमार सेन, केशव चंद्र सेन आदि मनीषियों का नाम लिया जा सकताहै ।

चू:कि आरंभ से ही कलकत्ता अंग्रेजी सत्ता का गढ़ रहा था । इसलिए वहाँ इसका सबसेअधिक प्रभाव पडा । इन मनीषियों ने अंग्रेजी चाल को विफल करने के उद्देश्य से स्वदेशी शिक्षा एवं भारतीय संस्कृति के उन स्वर्णिम खंडों की ओर लोगों का ध्यान आकर्षित किया जिसे जान बूझ कर ओझल कर दिया गया था ताकि भारतीय हीनता के बोझ तले दबे रहें और गुलामी की मानसिकता फलती – फुलती रहें । लेकिन इसी बीच सिंधु घाटी सभ्यता एवं मोहनजोदारो के अवशेष मिले जो इस बात को प्रमाणित करते थे कि दुनिया में सबसे पुरानी सभ्यता भारतीयों की थी । इस बात ने अंग्रेजी सत्ता के षडयंत्र को उजागर करने में अहम भूमिका निभाई । भारतीय मनीषियों ने इस तरह के राष्ट्रीय तत्वों को उजागर कर भारतीयों के भीतर बसे सांस्कृतिक हीनता ग्रंथि को तोड़ा और भारतीय संस्कृति की महानता को प्रकट किया ।

इतिहास के उपरोक्त तथ्यों की ओर ध्यान दिलाने का उद्देश्य यह था कि वर्तमान में जिस प्रकार आधुनिक सभ्यता के पोषक तत्व के रुप में पश्चिमी सभ्यता एवं अंग्रेजी को ज्ञान की भाषा के रुप में प्रस्तुत किया जा रहा है उसकी वास्तविक पडताल की जाए एवं राजभाषा के रुप में हिंदी की महत्ता को सिद्ध किया जाए ।

जिस समय भारत आजाद हुआ और भारतीय संविधान ने अपना रुप ग्रहण करना आरंभ किया उस समय भाषा का मुद्दा बेहद संवेदनशील एवं अहम था क्योंकि इसी के माध्यमसे आगे भारत सरकार अपना राजकाज चलानेवाली थी । अतः भारत की बहुभाषिक एवं बहु भौगोलिक स्थिति को देखते हुए किसी ऐसी भाषा के चुनाव का प्रश्न था जो पूरे देश की जनता की विभिन्न अभिव्यक्तियों को इस रुप में प्रकट कर सके जो शेष भारत वासियों को भी आसानी से समझ में आ सकें । बहुत दिनों की मशक्कत के बाद अंत में संविधान सभा ने हिंदी को राजभाषा एवं देवानागरी को अपनी लिपि घोषित किया ।

आइए जानते है तब से लेकर अब तक हिंदी को क्यों राजभाषा बनाने का निर्णय लिया गया और तब से लेकर अब तक हिंदी किस प्रकार अपने स्वरुप का विस्तार एवं विकास करती हुई आज तकनीकी माध्यम एवं रोजगार की भाषा बन गई :-

स्वतंत्रता पूर्व का परिदृश्य

आजादी के पहले अंग्रेजी एवं उर्दू एक साथ राजभाषा के पद पर आसीन थीं । कुछ स्थानों पर न्यायालय की भाषा के रुप में भी इन दोनों का प्रयोग होता था । एक समय ऐसा भी आया कि उर्दू ने हिंदी को पदच्युत कर दिया एवं नागरी बोलने वालों की संख्या नगण्य हो गई । ऐसे विकट समय में राजा शिव प्रसाद 'सितारे हिंद' (1823-1895 ई.) का योगदान अकथनीय है । राजा शिव प्रसाद ब्रिटिश सता में शिक्षा इंस्पेक्टर थे । उन्होंने उर्दू की जगह ऐसी नागरी का प्रस्ताव रखा जो 'आम फहम' और 'खास फहम' दोनों हो । उन्होंने खडी बोली हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाकर विज्ञान तथा भूगोल विषय पर हिंदी में पुस्तकें लिखकर यह सिद्ध किया कि हिंदी में किसी भी विषय को अभिव्यक्त करने की पूर्ण क्षमता है। अंग्रेजी सत्ता को हार मानकर उनका यह प्रस्ताव मानना पड़ा और इस प्रकार हिंदी धीरे – धीरे ही सही अपनी दिशा में आगे बढ़ने लगी ।

शिव प्रसाद के उपरांत भारतेंदु हरिश्चंद्र (1850-1884 ई.) ने खडी बोली हिंदी को आगे बढाने में मिल के पत्थर स्थापित किए । अपने नाटकों एवं रचानाओं के माध्यम से उन्होंने भारी जन समर्थन प्राप्त कर तत्कालीन

ब्रिटिश सत्ता को न्यायालय में हिंदी को स्थान देने के लिए मजबूर किया। भारतेंदु ने अपने वक्तव्यों और करतबों के माध्यम से हिंदी को आम भारतीय जनता की भाषा सिद्ध किया और उसे शासन की भाषा के रुप में स्थापित कराने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

उधर देश के अन्य भागों जैसे गुजरात में भी हिंदी के पक्ष मे गुजराती के महान कवि श्री नर्मद (1833-86) ने हिंदी को राष्ट्रभाषा बनाने की पुरजोर मांग की।

हिंदी के अखिल भारतीय स्तर की पहचान को पुख्ता करने में आर्य समाज के श्री दयानंद सरस्वती का योगदान भी अप्रतिम है। 1872 ई. में जब वे कलकत्ता में केशवचन्द्र से मिले तो केशव चंद्र सेन ने स्वामी जी को यह सलाह दी कि "आप संस्कृत छोड़कर हिंदी बोलना आरम्भ कर दें तो भारत का असीम कल्याण हो जायेगा।" इसके उपरांत ही स्वामी दयानंद सरस्वतीजी के व्याख्यानों की भाषा हिंदी हो गयी एवं हिंदी के उत्थान के लिए स्वामी जी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'सत्यार्थ प्रकाश' को हिंदी में लिखा। स्वामी दयानंद सरस्वती जी राष्ट्रीय महत्व के व्यक्ति थें, अतः उनका कहा भारतीय जनमानस में अमिट छाप छोड़ता था। 'सत्यार्थ प्रकाश' के प्रकाशन के साथ ही हिंदी के अखिल भारतीय पहचान को गति मिली।

दयानंद सरस्वती के समानांतर ही सन् 1873 ई. में महेन्द्र भट्टाचार्य द्वारा हिंदी में 'पदार्थ विज्ञान (Material science)' की रचना की गई। इस रचना के माध्यम से इस बात का जोरदार खंडन हुआ कि हिंदी में वैज्ञानिक लेखन संभव नहीं है। हाँ, यह अवश्य था कि उस समय तक हिंदी अपने परिष्कृत रुप में सामने नहीं आ पाई थी। इसके बावजूद 'पदार्थ विज्ञान' जैसी वैज्ञानिक कृति का हिंदी भाषा में प्रकाशन हिंदी की अभिव्यक्ति एवं संप्रेषण शक्ति को ही दर्शाता है।

उपन्यास विधा को औद्योगिक समाज की परिणति माना जाता है। अंग्रेजी उपनिवेशवाद के आगमन के साथ ही भारत में औद्योगिक समाज का पदार्पण माना गया। इस आधुनिक समाज में अन्य विषयों / विधाओं के समानांतर ही सन् 1877 ई. में श्रध्दाराम फिल्लौरी ने 'भाग्यवती' नामक हिंदी उपन्यास की रचना कर हिंदी की समाजोन्मुखी विषयों के आत्मसात को भी सिद्ध कर दिया अर्थात इससे हिंदी में आधुनिक समाज की सभी गतियों को प्रकट करने का सामर्थ्य प्रमाणित हो गया।

इसी दौरान हिंदी को प्रतिष्ठित करने की कवायद में सबसे महत्वपूर्ण घटना विद्या की नगरी कही जाने वाली काशी अर्थात बनारस में घटी। सन् 1893 ई. काशी नागरी प्रचारिणी सभा स्थापना इस उद्देश्य से की गई कि विभिन्न क्षेत्र के विद्वान मिलकर भारत की संस्कृति के आख्यान के रुप में रची गई विभिन्न प्रसंगों की कृतियों को एकत्रित करेंगे और आवश्यकतानुसार उसे खड़ी बोली के रुप में मौजूद बहुसंख्यक भारतीयों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे। निःसंदेह नागरी प्रचारिणी सभा अपने उद्देश्यों में पूर्ण रुप से सफल हुई और हिंदी के आधार स्तंभ के रुप में मौजूद भिन्न भारतीय बोलियों में रचे गए एवं गुमनामी के अंधेरे में खो गए अनेक महान साहित्यकारों का जीर्णोधार किया। बाद में संस्था के श्री महावीर प्रसाद द्विवेदी ने 'सरस्वती' पत्रिका के माध्यम से रही – सही कसर भी पूरी कर दी। उन्होंने हिंदी के नये लेखकों की ना केवल एक फौज खड़ी की बल्कि हिंदी की व्याकरणिक स्थिति को भी सुधारा। इस प्रकार 19 वीं सदी में हिंदी जनता एवं शासन की भाषा बनने के का प्रमाण प्रस्तुत करने लगी।

धीरे –धीरे हिंदी की अखिल भारतीय व्यापकता के कारण उसे भारतीय राजनीतिज्ञों से राजनैतिक समर्थन भी मिलने लगा। सन् 1918 ई. में श्री. लोकमान्य बालगंगाधर तिलक ने कांग्रेस अध्यक्ष की हैसियत से घोषित किया कि हिंदी भारत की राजभाषा होगी।ठीक उसी समय महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (1918 ई.) की स्थापना की एवं सभी भारतीयों से हिंदी को एक स्वर से राष्ट्रभाषा स्वीकारने की अपील की।

दरअसल तात्कालीन सभी राजनेता इस तथ्य से परिचित थे कि हिंदी के माध्यम से ही वे संपूर्ण भारत को

संबोधित कर सकते हैं एवं सभी जगह एक साथ सुनेसमझे जा सकते हैं एवं बिना हिंदी जाने राष्ट्रीय राजनीति को संभालना संभव नहीं हो सकता क्योंकि हिंदी संपूर्ण भारत वर्ष की भाषा है तथा यह भारत को भारत से जोड़ती है ।

इस अवधारणा के अंतर्गत ही 15 जुलाई 1937 को मद्रास राज्य के मुख्यमंत्री के रुप में सी. राजगोपालाचारी ने हिंदी शिक्षा को राज्य के सभी नागरिकों के लिए अनिवार्य कर दिया क्योंकि वे अपनी दूरदृष्टि से यह समझ चुके थें कि रोजगार के लिए जब उनके राज्य के युवा राज्य से बाहर जाएंगे तो हिंदी ही उनकी सहायक बनेगी ।

स्वतंत्रता के बाद का परिदृश्य

ब्रिटिश सत्ता से आजादी मिलने के उपरांत ही भारत को संप्रभु संपन्न राष्ट्र बनाने के लिए भारतीय संविधान का निर्माण आरंभ हुआ । संविधान सभा ने राष्ट्र हित को सर्वोपरि मानते हुए लोकतांत्रिक गणराज्य के रुप में नये भारत की आधार शिला रखी । संप्रभु संपन्न राष्ट्र निर्माण के क्षेत्र में विभिन्न मुद्दों पर बहस हुई लेकिन भारत के शासन की भाषा अर्थात राजभाषा एवं राष्ट्र भाषा को लेकर बहुत ही तीखी बहस हुई। अंत में 14 सितंबर,1949 को संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा एवं देवनागरी को इसकी लिपि के रुप में स्वीकार किया। इस दिन को हम अब हिंदी दिवस के रुप में मनाते हैं ।

जब 26 जनवरी,1950 को संविधान लागू हुआ। उस समय उसमें कई भाषाई प्रावधान (अनुच्छेद 120, 210 तथा 343 से 351) किए गए । मैं यहाँ इन प्रावधानों का वर्णन नहीं कर रहा हूँ । (प्रावधानों की विस्तृत जानकारी के लिए राजभाषा विभाग, भारत सरकार की वेबसाइट **www.rajbhasha.gov.in** देखें।

संविधान में दिए गए राजभाषा नियमों एवं प्रावधानों के अनुसार सन् 1952 ई. में भारत के शिक्षा मंत्रालय द्वारा हिंदी भाषा का ऐच्छिक प्रशिक्षण प्रारम्भ किया गयाएवं

27 मई,1952 को राज्यपालों/उच्चतम न्यायालय के न्यायाधीशों तथा उच्च न्यायालय के न्यायाधीशों की नियुक्तियों में अंग्रेजी भाषा के अतिरिक्त हिंदी भाषा व भारतीय अंकों के अन्तर्राष्ट्रीय स्वरुप के अतिरिक्त अंकों के देवनागरी स्वरुप का प्रयोग प्राधिकृत किया गया।

इस बीच केन्द्र सरकार के मंत्रालयों, विभागों, संबद्ध व अधीनस्थ कर्मचारियों को हिंदी का सेवाकालीन प्रशिक्षण देने के लिए जुलाई 1955 में गृह मंत्रालय के अन्तर्गत हिंदी शिक्षण योजना आरंभ की गई । तब से लेकर अब तक हिंदी शिक्षण योजना के अधीन अनेकों सफल प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया जा चुका है ।

हिंदी की संवैधानिक स्थिति को मजबूत करने के लिए, संविधान के अनुच्छेद 344 (1) के अन्तर्गत 7 जून,1955 को बी.जी. खेर आयोग एवं सन् 1957 में संसदीय राजभाषा समिति/जी. बी. पंत समिति का गठन हुआ ।

जहाँ खेर आयोग ने हिंदी को एकान्तिक व सर्वश्रेष्ठ स्थिति में पहुँचाने पर जोर दिया, वहीं पंत समिति ने हिंदी को प्रधान राजभाषा बनाने पर जोर तो दिया, लेकिन अंग्रेजी को हटाने के बजाये उसे सहायक राजभाषा बनाये रखने की वक़ालत की । सरकार ने खेर आयोग की सिफारिशों पर कोई ठोस कदम नहीं उठाए,जबकि सरकार ने पंत समिति की सिफ़ारिशों को स्वीकार किया, जो आगे चलकर राजभाषा अधिनियम 1963/67 का आधार बनी ।

बहरहाल, खेर आयोग की रिपोर्ट पर विचार हेतु तत्कालीन गृह मंत्री श्री. गोविन्द वल्लभ पंत की अध्यक्षता में संसदीय समिति का गठन किया गया एवं 8 फरवरी,1959 को संविधान के अनुच्छेद 344 (4) के अन्तर्गत संसदीय समिति की रिपोर्ट राष्ट्रपति जी को प्रस्तुत की गई।

सितंबर, 1959 में ही संसदीय समिति की रिपोर्ट पर संसद में जोरदार बहस हुई । तत्कालीन प्रधान मंत्री पंडीत जवाहर लाल नेहरू द्वारा आश्वावासन दिया गया कि अंग्रेजी को सह-भाषा के रुप में प्रयोग में लाए जाने हेतु कोई व्यावधान उत्पन्न नहीं किया जाएगा और न ही इसके लिए कोई समय-सीमा ही निर्धारित की जाएगी। भारत की सभी भाषाएं समान रुप से आदरणीय हैं और ये हमारी राष्ट्रभाषाएं हैं ।

इन विचारों के साथ हिंदी एवं अंग्रेजी साथ – साथ भारत

की राजभाषा के रुप में गतिशील हुई । राजभाषा के रुप में हिंदी की प्रगति के लिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों को हिंदी टंकण एवं आशुलिपि का प्रशिक्षण दिया जाना अनिवार्य हो गया था । अतः सन्1960 में हिंदी शिक्षण योजना के अंतर्गत ही सभी केंद्रीय कर्मचारियों के लिए हिंदी टंकण एवं आशुलिपिकों को हिंदी आशुलिपि का अप्रशिक्षण भी अनिवार्य कर दिया गया ।

भाषा प्रशिक्षण एवं टंकण / आशुलिपि के प्रशिक्षण के साथ ही 27 अप्रैल,1960 कोसंसदीय समिति की रिपोर्ट पर राष्ट्रपति के आदेश जारी किए गए जिनमें हिंदी शब्दावलियों का निर्माण, संहिताओं व कार्यविधिक साहित्य का हिंदी अनुवाद, कर्मचारियों को हिंदी भाषा का प्रशिक्षण, हिंदी प्रचार, विधेयकों की भाषा, उच्चतम न्यायालय व उच्च न्यायालयों की भाषा आदि मुद्दे शामिल थें ।

इधर अनुच्छेद 343(3) के प्रावधानों व तात्कालीन प्रधानमंत्री श्री जवाहर लाल नेहरू के आश्वासन को ध्यान में रखते हुए 10 मई,1963 को राजभाषा अधिनियम बनाया गया। इसके अनुसार हिंदी संघ की राजभाषा व अंग्रेजी सह-राजभाषा के रुप में प्रयोग में लाई गई।

हिंदी की प्रगति को सुनिश्चित करने के लिए प्रधान मंत्री की अध्यक्षता में 5 सितंबर,1967 कोकेन्द्रीय हिंदी समिति का गठन किया गया। यह समिति सरकार की राजभाषा नीति के संबंध में महत्वपूर्ण दिशा-निदेश देने वाली सर्वोच्च समिति है। इस समिति में प्रधानमंत्री जी के अलावा नामित केन्द्रीय मंत्री, कुछ राज्यों के मुख्यमंत्री, सांसद तथा हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषाओं के विद्वान सदस्य के रुप में शामिल किए गए ।

आगे चलकर राजभाषा अधिनियम 1963 में कुछ संशोधन किया गया । यह संशोधन 16 दिसंबर,1967 को किया गया । इस संशोधन में संसद के दोनों सदनों द्वारा राजभाषा संकल्प पारित किया गया जिसमें हिंदी के राजकीय प्रयोजनों हेतु उत्तरोत्तर प्रयोग के लिए अधिक गहन और व्यापक कार्यक्रम तैयार करने, प्रगति की समीक्षा के लिए वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट तैयार करने, हिंदी के साथ -साथ 8वीं अनुसूची की अन्य भाषाओं के समन्वित विकास के लिए कार्यक्रम तैयार करने, त्रिभाषा सूत्र का अपनाये जाने, संघ सेवाओं के लिए भर्ती के समय हिंदी व अंग्रेजी में से किसी एक के ज्ञान की आवश्यकता अपेक्षित होने तथा संघ लोक सेवा आयोग द्वारा उचित समय पर परीक्षा के लिए संविधान की 8वीं अनुसूची में सम्मिलित सभी भाषाओं तथा अंग्रेजी को वैकल्पिक माध्यम के रुप में रखने की बात कही गई । संकल्प 18 अगस्त,1968 को भारत के राजपत्र में प्रकाशित किया गया।

जिस समय संविधान की आठवीं अनुसूची में भाषाओं को दर्ज किया जा रहा था उस समय सिंधी को इसमें शामिल नहीं किया गया था । बाद में सन् 1967 में सिंधी भाषा को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया ।

राजभाषा अधिनियम, 1963 (यथा संशोधित 1967) में जो संशोधन किए गए उसके अनुसार धारा 3 (4) में यह प्रावधान किया गया कि हिंदी में या अंग्रेजी भाषा में प्रवीण संघ सरकार के कर्मचारी प्रभावी रुप से अपना काम कर सकें तथा केवल इस आधार पर कि वे दोनों ही भाषाओं में प्रवीण नहीं हैं, उनका कोई अहितन हो। धारा 3 (5) के अनुसार संघ के राजकीय प्रयोजनों में अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त कर देने के लिए आवश्यक है कि सभी राज्यों के विधान मण्डलों द्वारा (जिनकी राजभाषा हिंदी नहीं है) ऐसे संकल्प पारित किए जाएं तथा उन संकल्पों पर विचार करने के पश्चात अंग्रेजी भाषा का प्रयोग समाप्त करने के लिए संसद के हरेक सदन द्वारा संकल्प पारित किया जाए।

राजभाषा संकल्प 1968 में किए गए प्रावधानों के अनुसार वर्ष 1968-69 से राजभाषा हिंदी में कार्य करने के लिए विभिन्न मदों के लक्ष्य निर्धारित किए गए तथा इसके लिए वार्षिक कार्यक्रम तैयार किया गया ताकि राजभाषा के रुप में हिंदी का विस्तार होता जाए ।

लेकिन राजभाषा में कार्य करने वाले लोगों की यह दिक्कत थी कि उनके द्वारा किए गए अनुवाद का स्वरुप मानक नहीं होता था और अनुवाद सामग्री पर व्यक्ति

विशेष का प्रभाव रहता था । साथ ही अनुवाद की भाषा भी बहुत क्लिष्ट हो जाती थी । ऐसी स्थिति से निपटने के लिए 1 मार्च,1971 को भारत सरकार ने केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो का गठन किया गया एवं केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो के दिल्ली स्थिति मुख्यालय में एक प्रशिक्षण केन्द्र की भी स्थापना की गई जहाँ सभी अनुवाद कर्मियों को अनुवाद करने का प्रशिक्षण दिया जाता है ।

इस प्रकार धीरे – धीरे राजभाषा के रुप में हिंदी के प्रयोग एवं उसके कार्यालयी स्वरुप का विकास होने लगा ।

सन् 1974 में तीसरी श्रेणी के नीचे के कर्मचारियों, औद्योगिक प्रतिष्ठानों के कर्मचारियों तथा कार्य प्रभारित कर्मचारियों को छोड़कर केन्द्र सरकार के कर्मचारियों के साथ-साथ केन्द्र सरकार के स्वामित्व एवं नियंत्रणाधीन निगमों, उपक्रमों, बैंकों आदि के कर्मचारियों व अधिकारियों के लिए हिंदी भाषा, टंकण एवं आशुलिपि का अनिवार्य प्रशिक्षण कर दिया गया ताकि हिंदी कार्यालय में और बड़े पैमाने पर प्रयोग की जाए ।

जून, 1975 तक राजभाषा के प्रयोग एवं उसके क्रियान्वयन के क्षेत्र में कुछ प्रगति देखने को मिली एवं सरकार द्वारा यह तय किया गया कि राजभाषा से संबंधित संवैधानिक, विधिक उपबंधों के कार्यान्वयन हेतु राजभाषा विभाग का गठन किया जाना चाहिए । इस प्रकार जून, 1975 में राजभाषा विभाग का गठन किया गया । राजभाषा विभाग के गठन के साथ ही अगले वर्ष अर्थात वर्ष 1976 में राजभाषा नियम बनाए गए एवं इसके क्रियान्वयन के लिए एक उच्च समिति अर्थात संसदीय राजभाषा समिति का गठन किया गया । तब से लेकर अब तक समिति ने अपनी रिपोर्ट के 8 भाग भारत के राष्ट्रपति के समक्ष प्रस्तुत किए हैं जिनमें से सभी आठ खंडों पर राष्ट्रपति के आदेश जारी हो गए हैं।

राजभाषा विभाग बनने के उपरांत इसके अधीन कार्यरत कर्मचारियों के लिए सन् 1981 में केन्द्रीय सचिवालय राजभाषा सेवा संवर्ग का गठन किया गया।

आगे चलकर 25 अक्टूबर,1983 को केन्द्रीय सरकार के मंत्रालयों, विभागों, सरकारी उपक्रमों, राष्ट्रीयकृत बैंकों में यांत्रिक और इलेक्ट्रानिक उपकरणों द्वारा हिंदी में कार्य को बढ़ावा देने तथा उपलब्ध द्विभाषी उपकरणों के प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से राजभाषा विभाग में तकनीकी कक्ष की स्थापना की गई।

सरकारी कार्यालयों, उपक्रमों एवं बैंकों में राजभाषा के व्यापक प्रसार – प्रचार के लिए 21 अगस्त,1985 को केन्द्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान का गठन कर्मचारियों / अधिकारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि के पूर्णकालिक गहन प्रशिक्षण सुविधा उपलब्ध कराने के लिए किया गया।

इसी बीच 1986 में कोठारी शिक्षा आयोग की रिपोर्ट संसद में प्रस्तुत की गई। 1968 में पहले ही यह सिफारिश की जा चुकी थी कि भारत में शिक्षा का माध्यम भारतीय भाषाएं होनी चाहिए। उच्च शिक्षा के माध्यम के संबंध में नई शिक्षा नीति (1986) के कार्यान्वयन -कार्यक्रम में कहा गया -

"स्कूल स्तर पर आधुनिक भारतीय भाषाएं पहले ही शिक्षण माध्यम के रुप में प्रयुक्त हो रही हैं। आवश्यकता इस बात की है विश्वविद्यालय के स्तर पर भी इन्हें उत्तरोत्तर माध्यम के रुप रुप में अपना लिया जाए। इसके लिए अपेक्षा यह है कि राज्य सरकारें, विश्वविद्यालय अनुदान आयोग से परामर्श करके, सभी विषयों में और सभी स्तरों पर शिक्षण माध्यम के रुप में उत्तरोत्तर आधुनिक भारतीय भाषाओं को अपनाएं।"

इस समिति की सिफारिशों के आधार पर कुछ विश्वविद्यालयों ने इस पर कार्यवाही भी की परंतु अखिल भारतीय स्तर पर इससे कुछ खास परिवर्तन देखने को नहीं मिला ।

हाँ, सरकारी स्तर पर 1986-87 में इंदिरा गांधी राज भाषा पुरस्कार प्रारम्भ किए गए। लेकिन इन पुरस्कारों की दुनियाँ में सामान्य जनता की भागीदारी नगण्य थी ।

इस दौरान 9 अक्टूबर,1987 को राजभाषा नियम, 1976 में संशोधन किए गएएवं संशोधनों के फलस्वरुप

1992 में कोकणी, मणिपुरी व नेपाली भाषाएं संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल की गई ।

इस प्रकार धीरे – धीरे हिंदी के कदम सरकारी राज काज में बढ़ता गया और 14 सितंबर, 1999 को संघ की राजभाषा हिंदी की स्वर्ण जयंती मनाई गई।

अन्य विभागों के पोर्टल के तर्ज पर 24 जनवरी, 2000 को राजभाषा विभाग का पोर्टल का लोकार्पण माननीय गृह मंत्री जी द्वारा किया गया जिसमें विभाग से संबंधित विभिन्न जानकारियां द्विभाषिक रुप में उपलब्ध कराई गई ।

हिंदी को आधुनिक ज्ञान – विज्ञान की भाषा बनाने की कवायद में दिनांक 20.10.2000 से राष्ट्रीय ज्ञान विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार की घोषणा की गई जिसमें निम्न पुरस्कार राशियां थीं :-

(1) प्रथम प्ररस्कार - 100000 रुपये

(2) द्वितीय प्ररस्कार - 75000 रुपये

(3) तृतीय पुरस्कार - 50000 रुपये

(4) 10 सांत्वना पुरस्कार - 10000 रुपये प्रत्येक

संविधान की आठवीं अनुसूची में जिन भाषाओं को दर्ज किया जाता है उसे सरकारी संरक्षण एवं उसके विकास पर सरकार कुछ मदों के व्यय का प्रावधान करती है । इस बात को जानने के साथ ही विभिन्न बोलियों एवं उपा बोलियों के संरक्षक अपनी – अपनी बोलियों को संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल करने की होड में लग गए । इस भाषाई अफरा – तफरी के माहौल को शांत करने के लिए दिनांक 2.9.2003 को डॉ. सीता कान्त महापात्र की अध्यक्षता में एक समिति का गठन किया गया जो संविधान की आठवीं अनुसूची में अन्य भाषाओं को सम्मिलित किए जाने तथा आठवीं अनुसूची में सभी भाषाओं को संघ की राजभाषा घोषित किए जाने की साध्यता परखने पर विचार करेगी। समिति ने 14.6.2004 को अपनी रिपोर्ट सरकार को प्रस्तुत की।

मंत्रिमंडल ने 11.9.2003 को एन.डी.ए. तथा सी.डी.एस. की परीक्षाओं में प्रश्न पत्रों को हिंदी में भी तैयार करने का निर्णय लिया क्योंकि इस सेवा से चुनकर आने वाले प्रशासनिक अधिकारियों को हिंदी का ज्ञान एवं हिंदी माध्यम से पढ़े अभ्यर्थियों को इस सेवा में चुने जाने का पूरा अवसर प्राप्त हो सकें ।

इधर प्रौदयोगिकी के माध्यम से भी हिंदी भाषा के प्रशिक्षण एवं विकास पर जोर देने के क्रम में 14 सितंबर, 2003 कोकंप्यूटर की सहायता से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए राजभाषा विभाग ने कंप्यूटर प्रोग्राम (लीला हिंदी प्रबोध, लीला हिंदी प्रवीण, लीला हिंदी प्राज्ञ) तैयार करवा कर सर्व साधारण द्वारा उसका निशुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया है।

पुनः 8 जनवरी, 2004 को संविधान की आठवीं अनुसूची में बोडो, डोगरी, मैथिली तथा सांथाली भाषाओं को शामिल किया गया एवं 22 जुलाई 2004 को केन्द्रीय सरकार की राजभाषा नीति के अनुपालन / कार्यान्वयन के लिए न्यूनतम हिंदी पदों के मानकों को पुन निर्धारित किया गया ।

इसी अंतराल में 6 सितंबर, 2004 को मातृभाषा विकास परिषद् द्वारा दायर एक जनहित याचिका पर उच्चतम न्यायालय ने यह पाया कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के गठन का उद्देश्य हिंदी एवं अन्य आधुनिक भाषाओं के लिए तकनीकी शब्दावली में एकरुपता अपनाया जाना है। यह एकरुपता तकनीकी शब्दावली के प्रयोग के लिए आवश्यक है। उच्चतम न्यायालय ने निदेश दिया कि आयोग द्वारा बनाई गई तकनीकी शब्दावली भारत सरकार के अंतर्गत एन.सी.ई.आर.टी तथा इसी प्रकार की अन्य संस्थाओं द्वारा तैयार की जा रही पाठय पुस्तकों में प्रयोग में लाई जाए ताकि भाषा की एकरुपता कायम की जा सकें ।

14 सितंबर, 2004 को राजभाषा विभाग ने पुणे स्थित डी.आर.डी.ओ. की सहायता से अहिंदी भाषियों के लिए कंप्यूटर से तमिल, तेलुगु, मलयालम तथा कन्नड़ भाषाओं के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए कंप्यूटर प्रोग्राम तैयार करवा कर उसके

निशुल्क प्रयोग के लिए उसे राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया एवं इसके ठीक एक वर्ष के बाद अर्थात 14 सितंबर, 2005 को बांगला भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया गया।

इस कडी को और आगे बढ़ाते हुए 20 जून, 2005 को 525 हिंदी फोंट, फोंट कोड कनवर्टर, अंग्रेजी - हिंदी शब्दकोश, हिंदी स्पेल चेकर को निशुल्क प्रयोग के लिए वेब साइट पर उपलब्ध करा दिया गया। इन्हे http://ildc.in, http://ildc.gov.in डाउनलोड किया जा सकता है। साथ ही मंत्र-राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर को भी प्रशासनिक एवं वित्तिय क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया।

8 अगस्त, 2005 को राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार का नाम बदल कर राजीव गांधी राष्ट्रीय ज्ञान-विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन पुरस्कार कर दिया गया तथा पुरस्कार राशि बढ़ा कर निम्न प्रकार कर दी गई :-

प्रथम पुरस्कार –रु. 2 लाख
द्वितीय पुरस्कार - रु. 1.25 लाख
तृतीय पुरस्कार - रु. 0.75 लाख
सांत्वना पुरस्कार (10) - रु. 10 हजार प्रत्येक को

यह योजना वर्ष 2004-05 में प्रकाशित पुस्तकों के लिए लागू की गई।

पुनः 14 सितंबर,2006 को कंप्यूटर की सहायता से उड़िया, असमी, मणिपुरी तथा मराठी भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया एवं मंत्र-राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर लघु उद्योग एवं कृषि क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया।

इस उपलब्धि के एक वर्ष के उपरांत 14 सितंबर, 2007 को कंप्यूटर की सहायता से नेपाली, पंजाबी, कश्मीरी तथा गुजराती भाषा के माध्यम से प्रबोध, प्रवीण तथा प्राज्ञ स्तर की हिंदी स्वयं सीखने के लिए प्रोग्राम तैयार करवा कर राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया एवं मंत्र-राजभाषा अंग्रेजी से हिंदी अनुवाद सॉफ्टवेयर सूचना-प्रौद्योगिकी एवं स्वास्थ्य सुरक्षा क्षेत्रों के लिए प्रयोग एवं डाउनलोड हेतु राजभाषा विभाग की वैब साइट पर उपलब्ध करा दिया।

श्रुतलेखन- राजभाषा (हिंदी स्पीच से हिंदी टेक्सट) अंतिम वर्जन जन-प्रयोग के लिए मार्किट में बिक्री के लिए उपलब्ध है।

इस बीच राजभाषा अधिनियम 1987 में वर्ष 2009, 2011, में संशोधन कर क्रमशः 'क' क्षेत्र एवं 'ख' क्षेत्र के प्रदेशों का विस्तार/ परिवर्तन किया गया।

अंत में वर्ष 2015 में राजभाषा विभाग ने नई पुरस्कार योजनाएं चलायी और पहले से दिए जाने वाले पुरस्कारों के नामों में बदलाव किए गए। ये पुरस्कार इस प्रकार हैं :-

राजभाषा गौरव पुरस्कार हिंदी दिवस पर दिया जाता है। यह भारत के किसी भी नागरिक द्वारा ज्ञान-विज्ञान के मौलिक पुस्तक लिखने पर और केन्द्र सरकार के कर्मियों (सेवानिवृत्त सहित) द्वारा पुस्तक या उत्कृष्ट लेख लिखने हेतु मिलता है। यह पुरस्कार तकनीकी / विज्ञान से जुड़े हिंदी भाषा के पुस्तक लेखन को प्रोत्साहित करने के लिए दिया जाता है। इसमें उन पुस्तकों को लिया जाता है, जो प्रथम बार प्रकाशित हुई हो। किसी अन्य पुस्तक का अनुवाद न हो।

प्रथम पुरस्कार – रु. 2,00,000/-
द्वितीय पुरस्कार – रु. 1,25,000/-
तृतीय पुरस्कार – रु. 75,000/-
प्रोत्साहन पुरस्कार – रु. 10,000/-

* प्रोत्साहन योजना में दस लोगों को पुरस्कार प्रदान किया जाता है।

इसके अतिरिक्त राजभाषा कीर्ति पुरस्कार हिंदी

दिवस के दिन प्रदान किया जाता है। इस पुरस्कार योजना के तहत कुल 39 पुरस्कार दिए जाते हैं। इस पुरस्कार को किसी विभाग, मण्डल, समिति आदि को दिया जाता है। वे संस्था जो हिंदी भाषा में अपने कार्यों को कर अच्छी प्रगति हासिल करती है, उसे यह पुरस्कार दिया जाता है।

इसके अतिरिक्त हाल ही में राजभाषा विभाग ने कंठस्थ टूल के तीन वर्जन निकाले है। कंठस्थ एक सॉफ्ट सहायता प्राप्त अनुवाद पअणाली है, जो विभिन्न सहकारी संगठनो को दस्तावेजो को एक भाषा से दुसरी भाषा में, हिंदी से अंग्रेजी और इसके विपरीत, अनुवाद करने में सहायता प्रदान करता है।

इसी क्रम मे भारत सरकार ने भाषिणी परियोजना। सॉफ्टवेयर भी विकसित किया है जिसका उद्देश भारतीय भाषाओं के बीच डिजिटल समावेशिता को बढ़ावा देते हुए राजभाषा हिंदी का पचार प्रसार करना है। हिंदी टेक्स -टू-स्पीच (TTS) प्रणाली के प्रयोगसे हिंदी में कार्य सुलभता को बढ़ावा मिला है।

राजभाषा विभाग ने AI आधारित अनुवादिनी सॉफ्टवेयर का भी विकास किया है जिससे किसी भी भारतीय भाषा में सटीक अनुवाद का कार्य किया जा सकता है।

इस प्रकार इस पूरे परिदृश्य को देखने के बाद हम समझ पाते हैं कि हिंदी किस प्रकार अपने आरंभिक अवस्था से लेकर वर्तमान स्थिति में पहुँची है और किस प्रकार वह भारतीय जनमानस की भाषा के कारण लोक प्रशासन की भाषा के रुप में गतिमान हुई है । आगे भी हिंदी में विकास की अनंत संभावनाएं हैं और ऐसा प्रतीत होता है कि जिस प्रकार हिंदी मीडिया, बाजार, फिल्मों एवं मनोरंजन के अन्य माध्यमों में अपनी उपस्थिति दर्ज करा रही है,वह दिन दूर नहीं जब हिंदी को किसी प्रोत्साहन या सहारे की आवश्यकता नहीं रह जायेगी और अन्य राष्ट्रों की तरह ही हिंदी ही भारत की राष्ट्र भाषा सिद्ध होगी ।

****

बाघिन की बेबसी

दिलीप पांचाल
वरिष्ठ कार्यालय सहायक (मा.सं.)

उत्तराखंड के कुमाऊं क्षेत्र में एक बाघिन नरभक्षी बन कई ग्रामीणों की जान ले चुकी थी। सरकारी प्रयासों के बावजूद वह हर बार बच निकलती और अधिक घातक होती जाती । तब ग्रामीणों को याद आया एक नाम - जिम कॉर्बेट । वह कोई साधारण शिकारी नहीं थे। उनके भीतर मानवता, समझ और जानवरों के प्रति सहानुभूति भी थी। उन्होंने यह कार्य न इनाम के लिए किया, न प्रसिद्धि के लिए, बल्कि मासूमों को बचाने और यह सच्चाई जानने के लिए कि आखिर वह बाघिन नरभक्षी कैसे बन गई। तब तक उसने 436 लोगों की जान ले ली थी। जिम ने बाघिन की गतिविधियों और हमलों का अध्ययन किया। उन्हें पता चला कि वह बाघिन गोली के एक पुराने जख्म और टूटे दांतों की पीड़ा झेल रही थी। इसके कारण उसके लिए जानवरों का शिकार करना मुश्किल हो गया था। बाघिन को मारने के बाद भी जिम को खुशी नहीं हुई। वह उसकी मृत देह के पास घुटनों के बल बैठ गए। अपनी पुस्तक 'Man-Eaters of Kumaon' में उन्होंने लिखा है - हर प्राणी के व्यवहार के पीछे एक कारण होता है। जो खतरा दिखता है, वह अक्सर बेबसी होती है। सच्ची बहादुरी मारने में नहीं, उसे समझने में है।

****

आयकर नीति, 2025

प्रशांत वडसाल
कनिष्ठ कार्यालय सहायक (मा.सं.)

व्यक्तिगत आयकर सुधार, व्यक्तियों, विशेष रुप से मध्यम वर्ग, जो किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, की वित्तीय भलाई को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। केंद्रीय बजट 2025 के निकट आने के साथ, नीति निर्धारक कर राहत उपायों, कर संरचनाओं के सरलीकरण और बचत एवं निवेश को बढ़ावा देने वाले प्रोत्साहनों पर ध्यान केंद्रित कर रहे हैं। मध्य वर्ग, जो आम तौर पर बढ़ती जीवन लागत और महंगाई से प्रभावित होता है, ऐसे सुधारों की अपेक्षा करता है जो वित्तीय राहत प्रदान करें और व्यय योग्य आय को बढ़ावा दें। सुधार के प्रमुख क्षेत्रों में कर स्लैब में परिवर्तन, धारा 80 सी और 80 डी के तहत कटौतियाँ, अधिभार दरों का संयुक्तिकरण और कर के बोझ को कम करते हुए अनुपालन बढ़ाने के उपाय शामिल हो सकते हैं। यह लेख बजट 2025 में संभावित व्यक्तिगत आयकर सुधारों पर आधारित है, जिसे मध्य वर्ग को केन्द्र में रखकर लिखा गया है।

केंद्रीय बजट 2025 में प्रमुख परिवर्तन :-

1. स्लैब दर और ब्याज में परिवर्तन ।
2. नई कर व्यवस्था में और सुधार।
3. कठिनाइयों को कम करने के लिए टीडीएस / टीसीएस को तर्कसंगत बनाना।
4. स्वैच्छिक अनुपालन को प्रोत्साहित करना।
5. अनुपालन बोझ को कम करना।

1. स्लैब रेट और ब्याज में परिवर्तन :- नई व्यवस्था में रियायती / छूट वाले कर दरों और उदार स्लैब (liberal slabs) का प्रावधान है। हालाँकि, नई व्यवस्था में कोई कटौती अनुमत नहीं है (उनके अलावा जो उदाहरण के लिए मानक कटौती के अलावा 80JJAA, 80M में उल्लिखित है)।

कुछ नहीं रु.0-रु.4 लाख	5% रु.4 - रु.8 लाख	10% रु.8 - रु.12 लाख	15% रु.12- रु.16 लाख	20% रु.16 - रु.20 लाख	25% रु.20-रु.24 लाख	30% > रु.24 लाख

2. बेहतर नई कर व्यवस्था :- केंद्रीय बजट 2025 में, भारत सरकार ने वेतनभोगी व्यक्तियों को राहत प्रदान करने और आर्थिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए, विशेष रूप से नई कर व्यवस्था के अंतर्गत, व्यक्तिगत आयकर संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए हैं। बजट 2025 की घोषणा के अनुसार, धारा 87A के तहत नई व्यवस्था में **कर छूट के लिए आय सीमा 7 लाख रुपये से बढ़ाकर 12 लाख रुपये कर दी गई है। इसके अतिरिक्त, दीर्घकालिक पूंजीगत लाभ के तहत कर योग्य आय, लॉटरी से जीत आदि जैसी विशेष दर के तहत कर योग्य आय को छोड़कर कर छूट 25,000 रुपये से बढ़कर 60,000 रुपये हो जाएगी।**

2.1 नई कर व्यवस्था अब 12 लाख तक की वार्षिक आय को कर से मुक्त करती है। इसके अतिरिक्त, 75,000 की संशोधित मानक कटौती के साथ, 12.75 लाख तक की आय वाले व्यक्ति को प्रभावी रुप से कोई आयकर नहीं देना पडेंगा।

12.75 लाख से अधिक आय के लिए, अद्यतन कर स्लैब बिंदु संख्या 1 में उल्लिखित के अनुसार हैं।

2.2 स्लैब के इस पुनर्गठन का उद्देश्य मध्यम वर्ग के लिए व्यय योग्य आय में वृद्धि करना है, जिससे उपभोग और बचत को बढ़ावा मिलेगा।

2.3. वेतनभोगी व्यक्तियों के लिए उपलब्ध **मानक कटौती को रु. 50,000 से बढ़ाकर रु 75,000** कर दिया गया है, जिससे अतिरिक्त कर राहत मिलेगी।

2.4 संशोधित कर व्यवस्था पिछली व्यवस्था की तुलना में काफी बचत प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, सालाना रु.10 लाख कमाने वाले व्यक्ति अब कोई कर नहीं देते हैं, जबकि 2024 की व्यवस्था के तहत वे पहले रु. 52,000 का भुगतान करते थे। इसी तरह, 20 लाख कमाने वालों की कर देयता 3,01,600 रुपए से घटकर 2,08,000 रुपए हो गई है, जिसके परिणामस्वरूप रु.93,600 की बचत हुई है।

इन सुधारों से मध्यम वर्ग की व्यय शक्ति में वृद्धि होने की उम्मीद है, जिससे आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा

3. टीडीएस/टीसीएस का सुव्यवस्थीकरण :- केंद्रीय बजट 2025 में स्रोत पर कर कटौती (टीडीएस) और स्रोत पर कर संग्रह (टीसीएस) को सुव्यवस्थीकरण करने का प्रस्ताव किया गया है, ताकि करदाताओं, खास तौर पर मध्यम आय वालों के लिए अनुपालन संबंधी चुनौतियों को कम किया जा सके। सरकार ने कर प्रक्रिया को सरल बनाने के उद्देश्य से विभिन्न टीडीएस अनुभागों में सीमा बढ़ा दी है।

कर सीमा		
आयकर धारा	**वित्त वर्ष 2024-2025 के लिए**	**वित्त वर्ष 2025 - 2026 के लिए**
194A - प्रतिभूतियाँ पर ब्याज के अलावा ब्याज	(i) वरिष्ठ नागरिक के लिए 50,000/- (ii) 40,000/- जब भुगतानकर्ता बैंक, सहकारी सोसायटी और डाकघर को छोडकर अन्य मामलों में हो। (iii) 5,000/- अन्य मामलों में (iii) 10,000/- अन्य मामलों में	(i) 1,00,000/- वरिष्ठ नागरिक के लिए; (ii) 50,000/-जब भुगतानकर्ता बैंक, सहकारी सोसायटी और डाकघर को छोडकर अन्य मामलों में हो।
194 - लाभांश, एक शेयरधारक व्यक्ति के लिए।	5,000/-	10,000/-
194 बी-लॉटरी, क्रॉसवर्ड पहेली आदि में जीत से मिली राशि और	वित्तीय वर्ष के दौरान कुल 10,000/- से अधिक की राशि	एकल लेनदेन के संबंध में 10,000/- की राशि,
194 डी – बीमा कमीशन/दलाली	15,000/-	20,000/-

3.1 वरिष्ठ नागरिकों के लिए कर कटौती की सीमा रु. 50,000 से दोगुनी होकर रु. 1 लाख हो गई है।

3.2 किराए पर टीडीएस के लिए रु. 2.40 लाख की वार्षिक सीमा बढ़ाकर रु. 6 लाख कर दी गई है।

3.3 माल की खरीद पर स्रोत पर कर संग्रह (TCS) को हटा दिया जाएगा, जो 1 अप्रैल, 2025 से प्रभावी होगा

3.4 उच्च टीडीएस दर उन मामलों में लागू होगी जहां करदाता **<u>पैन प्रदान नहीं करते हैं और पिछले आयकर रिटर्न भरने में विफल रहे हैं।</u>**

4. <u>स्वैच्छिक अनुपालन को प्रोत्साहित करना : -</u> अद्यतन कर विवरण दाखिल करने की समय-सीमा को मौजूदा दो वर्ष से बढ़ाकर चार वर्ष करना।

5. <u>अनुपालन बोझ को कम करना :-</u>

5.1 छोटे धर्मार्थ ट्रस्टों/संस्थाओं के लिए उनके पंजीकरण की अवधि को 5 वर्ष से बढ़ाकर 10 वर्ष करके अनुपालन को कम करना।

5.2 करदाताओं को बिना किसी शर्त के 02 स्व-अधिकृत संपत्तियों (पहले 01) के वार्षिक मूल्य का दावा करने की अनुमति दी जाएगी (पहले शर्तें जुड़ी हुई थीं)।

6. <u>वेतनभोगी कर्मचारी के लिए सीमांत राहत :-</u>

6.1 सीमांत राहत भारतीय आयकर प्रणाली में एक प्रावधान है जिसे करदाताओं को आय में वास्तविक वृद्धि की तुलना में उच्च कर देयता का सामना करने से रोकने के लिए डिज़ाइन किया गया है जब उनकी आय एक निश्चित सीमा से अधिक मामूली रूप से बढ़ जाती है । नई कर व्यवस्था के तहत, धारा 115BAC (1A) के अनुसार, यह राहत उन निवासी व्यक्तियों को उपलब्ध है, जिनकी आय रु.12 लाख से थोड़ी अधिक है। 6.2 वित्तीय वर्ष 2025-26 के लिए, नई कर व्यवस्था 12 लाख तक की आय पर कर छूट प्रदान करती है। वेतनभोगी व्यक्ति रु. 75,000% की मानक कटौती का दावा भी कर सकते हैं, जिससे 12.75 लाख तक की आय प्रभावी रूप से कर-मुक्त हो जाती है। सीमांत राहत यह सुनिश्चित करती है कि यदि किसी व्यक्ति की आय इन सीमाओं से थोड़ी अधिक है, तो देय अतिरिक्त कर उस राशि से अधिक नहीं होगा जिससे उनकी आय रु.12 लाख या रु.12.75 लाख (जैसा भी लागू हो) से अधिक हो।

उदाहरण : * एक वेतनभोगी व्यक्ति जिसकी वेतन से आय रु. 12,85,000 है। सीमांत राहत के बिना, कर गणना इस प्रकार होगी :

* कर योग्य आय: रु. 12,85,000 – रु. 75,000/- (मानक कटौती) = रु. 12, 10,000/- (कुल कर योग्य आय)

*** कर देयता : -**

आय स्तर (इन्कमस्लैब)	**कर दर**	**कर योग्य आय**	**कर राशि**
रु. 0 – रु. 4,00,000	शून्य	- -	
रु.4,00,001 – रु. 8,00,000	5%	रु.4,00,000	रु. 20,000/-
रु.8,00,001 – रु. 12,00,000	10%	रु. 4,00,000	रु. 40,000/-
रु. 12,00,001 – रु. 12,10,000	15%	रु.10,000 रु.	1,500/-
			कुल कर रु. 61,500/-

हालाँकि, आय 12,00,000% सीमा से रु.10,000 अधिक है। सीमांत राहत यह सुनिश्चित करती है कि देय अतिरिक्त कर (रु. 51,500) इस अतिरिक्त राशि से अधिक न हो। इसलिए, कर देयता रु.210,000 तक सीमित है।

यह तंत्र यह सुनिश्चित करता है कि छूट सीमा से थोड़ा अधिक आय वाले करदाताओं को अनुपातहीन रूप से उच्च कर बोझ का सामना न करना पड़े।

नोट: कर कानून परिवर्तन के अधीन हैं। सबसे सटीक और व्यक्तिगत जानकारी के लिए, नवीनतम आधिकारिक दिशा-निर्देशों या कर पेशेवर से परामर्श करना उचित है।

हिंदी पखवाडा - 2024 की रिपोर्टिंग

प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को भारत सरकार एवं एसपीएमसीआईएल के प्रत्येक कार्यालय में हिंदी दिवस/सप्ताह / पखवाड़ा मनाया जाता है । राजभाषा विभाग, निगम कार्यालय द्वारा प्रेषित मा. सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार का स.अ.शा. पत्र सं. 2024/04/11034 -रा.भा. (नीति) दिनांक 03.07.2024 द्वारा निर्देशित किया गया था कि सभी मंत्रालय/विभाग / सम्बध्द एवं अधीनस्थ कार्यालय / बैंक / उपक्रम / निगम/बोर्ड इत्यादी हिंदी पखवाड़ा कार्यक्रम 14 से 30 सितंबर के दौरान ही मनाना सुनिश्चित करें और विभिन्न प्रतियोगिताएं इसी अवधि के दौरान आयोजित करें । कार्यक्रम की रुपरेखा इस प्रकार बनाई जाए कि प्रत्येक कार्यालय के हिंदी दिवस का शुभारंभ दिनांक 14 - 15 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम्, नई दिल्ली में हिंदी दिवस, 2024 एवं चतुर्थ अखिल राजभाषा सम्मेलन से हो और समापन 30 सितंबर, 2024 को संबंधित कार्यालय में हो ।' इसी क्रम में भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक रोड में इस वर्ष दिनांक 14.09.2024 से दिनांक 30.09.2024 तक "हिंदी पखवाडा" आयोजित किया गया ।

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय द्वारा दिनांक 14 15 सितंबर, 2024 को भारत मंडपम्, नई दिल्ली में हिंदी दिवस, 2024 एवं चतुर्थ अखिल राजभाषा सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसके अध्यक्ष माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी थे। इस सम्मेलन में श्री लोकनाथ तिवारी, प्रबंधक (राजभाषा) ने भारत प्रतिभूति मुद्रणालय का प्रतिनिधित्व किया ।

आगे भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में "हिंदी पखवाडा 2024 " के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया

क्र.सं.	**कार्यक्रम का विवरण**	**दिनांक / समय / स्थान**
1	निबंध लेखन प्रतियोगिता	16 सितंबर, 2024
2	आशु भाषण प्रतियोगिता	17 सितंबर, 2024
3	अनुवाद लेखन प्रतियोगिता	18 सितंबर, 2024
4	प्रश्न मंच प्रतियोगिता	19 सितंबर, 2024
5	"राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ एवं यूनीकोड" विषय पर हिंदी कार्यशाला	25 सितंबर, 2024

1) निबंध लेखन प्रतियोगिता:- भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 16 सितंबर, 2024 को किया गया था। निबंध निम्न में से किसी एक विषय पर प्रशिक्षण केन्द्र में उपस्थित होकर अधिकतम 1000 शब्दों में लिखना था । इस प्रतियोगिता में कुल 14 प्रतिभागियों ने भाग लिया और कुल 04 प्रतिभागी पुरस्कृत हुए । निबंध लेखन प्रतियोगिता का विषय इस प्रकार था :-

क) आईएसपी के सौ वर्षों की यात्रा |

ख) वर्तमान समय में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की प्रासंगिकता ।

ग) शिक्षा में मातृभाषा का महत्व |

2) आशु भाषण प्रतियोगिता :- भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में आशु भाषण प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 17 सितम्बर, 2024 को किया गया था। इस प्रतियोगिता में प्रतिभागियों को तत्काल दिए गए विषय पर बोलना था । इस प्रतियोगिता के माध्यम से प्रतिभागियों के संबोधन कला को निखारने के लिए इस प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। इसमें कुल 06 प्रतिभागियों ने भाग लिया और कुल 04 प्रतिभागी पुरस्कृत हुए ।

3) अनुवाद लेखन प्रतियोगिता :- भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में राजभाषा हिंदी में मूल रुप से कार्य करने की संस्कृति को बढावा देने के लिए अंग्रेजी से हिंदी और हिंदी से अंग्रेजी में अनुवाद करने की प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 18 सितंबर, 2024 को किया गया । प्रतियोगिता में कुल 18 प्रतिभागियों ने भाग लिया- और कुल 04 प्रतिभागी पुरस्कृत हुए।

4) हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता : - भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में हिंदी प्रश्नमंच प्रतियोगिता बहुत ही लोकप्रिय है । इस प्रतियोगिता में दो-दो प्रतिभागियों की टीम बनाकर सामान्य ज्ञान पर प्रश्न पूछे जाते है। डिजिटल माध्यम से प्रोजेक्टर के सहारे प्रतिभागियों को समसामायिक विषयों पर जानकारी को परखने का मौका मिलता है। इस प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 19 सितम्बर, 2024 को किया गया था। इसमें सभी श्रेणी के कर्मचारियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। कुल 58 प्रतिभागियों ने भाग लिया और कुल 08 प्रतिभागी पुरस्कृत हुए।

5) हिंदी कार्यशाला : - भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में दिनांक 25 सितम्बर, 2024 को नवनियुक्त कर्मचारियों के लिए "राजभाषा कार्यान्वयन की चुनौतियाँ एवं यूनीकोड" विषय पर हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया । इसमें कुल 11 कर्मचारी उपस्थित थे । सभी को दैनिक कार्यालयीन कामकाज राजभाषा हिंदी में अधिक से अधिक करने, कम्प्यूटर पर यूनिकोड के माध्यम से हिंदी में टाइपिंग के बारे में जानकारी दी गई। सभी प्रतिभागियों से कम्प्यूटर पर यूनिकोड के माध्यम से हिंदी में टाइपिंग का अभ्यास भी कराया गया ।

हिंदी पखवाडा समापन एवं पुरस्कार वितरण :- भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में राजभाषा हिंदी पखवाडा समापन एवं पुरस्कार वितरण का कार्यक्रम दिनांक 30 सितम्बर, 2024 को भारत प्रतिभूति मुद्रणालयय जिमखाना हॉल में सम्पन्न हुआ । इस कार्यक्रम के लिए भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के कार्यपालक, यूनियन और एसोसिएशन के पदाधिकारी उपस्थित थे । मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने कुल 20 विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार एवं प्रमाणपत्र देकर सम्मान किया गया ।

साथ ही, राजभाषा हिंदी पखवाडा समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक द्वारा भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के कारखान, संपदा, गेस्ट हाउस एवं परिसर में सफाई करने वाले कुल 75 सफाईकर्मियों को "स्वच्छता मित्र " का प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया । आईएसपी, नासिक में पहली बार इस तरह का अभिनव प्रयास किया गया जिसे सभी ने बहुत सराहा।

गतिविधियाँ

1. गणतंत्र दिवस : - भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में दिनांक 26 जनवरी, 2025 को गणतंत्र दिवस बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। इस अवसर पर निदेशक (वित्त), एसपीएमसीआईएल द्वारा भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के 56 एवं केन्द्रीय औद्योगिक सुरक्षा बल के 5 ऐसे कुल 61 कर्मचारियों को निष्ठापूर्वक कार्य करने के लिए प्रशस्तिपत्र एवं कलाई घड़ी देकर सम्मानित किया गया। माननीय मुख्य महाप्रबंधक महोदय ने पुरस्कार प्राप्त सभी कर्मचारियों का अभिनंदन करते हुए अन्य कर्मचारियों से उनसे प्रेरणा और अपने कार्यक्षेत्र में बेहतर प्रदर्शन करते हुए अपना यथासंभव योगदान देकर इकाई का नाम रोशन करने की अपील की। राजभाषा विभाग ने आयोजन में सक्रिय सहभाग दिया। संपूर्ण कार्यक्रम का आयोजन पूर्ण रुप से राजभाषा हिंदी में किया गया।

2. संरक्षा सप्ताह : - भारत प्रतिभूति मुद्रणालय में दिनांक 4 मार्च, 2025 को 54 वा "राष्ट्रीय संरक्षा दिवस" तथा 4 मार्च, 2025 से 10 मार्च, 2025 तक संरक्षा सप्ताह मनाया गया । दिनांक 04 मार्च, 2025 को मुख्य महाप्रबंधक महोदय द्वारा संरक्षा ध्वजारोहण किया गया और सभी कार्यपालकों एवं मान्यता प्राप्त यूनियनों एवं एसोसिएशनों के प्रतिनिधियों को राजभाषा हिंदी में संरक्षा की शपथ दिलाई गई।

इस सप्ताह के दौरान अनुभागीय सुव्यवस्था प्रतियोगिता, घोष वाक्य प्रतियोगिता, निबंध प्रतियोगिता एवं चित्रकला प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। अनुभागीय सुव्यवस्था प्रतियोगिता सभी अनुभागों के लिए ली गई जिसमें एक प्रथम पुरस्कार, दो द्वितीय (रनर अप) पुरस्कार और एक सांत्वना (कन्सॉलिडेशन) पुरस्कार प्रदान किए गए। घोष वाक्य प्रतियोगिता में 67 और निबंध प्रतियोगिता में 33 प्रतिभागियों ने भाग लिया जिनमें से प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान किए गए। चित्रकला प्रतियोगिता स्टूडियो के कर्मचारियों और स्टूडियो छोड कर अन्य कर्मचारियों के लिए ऐसी दो भागो में ली गई। प्रत्येक भाग में प्रथम, द्वितीय और तृतीय ऐसे तीन-तीन पुरस्कार प्रदान किए गए।

3. "मेरा शहर मेरा स्वाभिमान" : - पुस्तक द्वारा डाक टिकटों के माध्यम से नाशिक शहर का आध्यात्मिक, सांस्कृतिक, सामाजिक इतिहास प्रस्तुत किया गया । नासिक शहर एवं परिसर की भूतकाल और वर्तमान की जानकारी प्रकाशित की गई। इस प्रयास को महाराष्ट्र राज्य स्तर पर सराहा गया और भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक (एस.पी.एम.सी.आई.एल. की इकाई) को "मेरा शहर मेरा स्वाभिमान - नासिक" पुस्तक के लिए महाराष्ट्र राज्य स्तरीय फिलाटेलिक प्रदर्शनी 2025 में वृहद सिल्वर मेडल (लार्ज सिल्वर मेडल) से सम्मानित किया गया है। यह प्रदर्शनी 22-25 जनवरी 2025 तक मुंबई के वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में आयोजित की गई थी। यह प्रतिष्ठित सम्मान संस्थान की उत्कृष्टता और फिलाटेली के क्षेत्र में योगदान को प्रदर्शित करता है तथा डाक टिकटों के माध्यम से नासिक शहर की कथानक सैर कराता है।

"मेरा शहर मेरा स्वाभिमान - नासिक" पुस्तक के लिए महाराष्ट्र राज्य स्तरीय फिलाटेलिक प्रदर्शनी 2025 में वृहद सिल्वर मेडल (लार्ज सिल्वर मेडल) से सम्मानित किया गया।

---

4. भारत प्रतिभूति मद्रणालय, नासिक में मानव संसाधन और राजभाषा विभाग द्वारा प्रशिक्षण के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया गया जिसका विवरण इस प्रकार है : -

दिनांक 22 अक्तूबर, 2024 को दत्तोपंत ठेंगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड, नासिक के सहयोग से सुरक्षा जागरुकता पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका कुल 27 स्टाफ एवं कामगारो ने लाभ उठाया ।

संकलन : विक्रांत कुमार
कार्यालय सहायक (मा.सं.)

आ) दिनांक 26 नवम्बर, 2024 को दत्तोपंत ठेंगडी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड, नासिक के सहयोग से कर्मचारियों के विकास एवं लाभ हेतु कर्मचारी विकास कार्यक्रम और परिवर्तन प्रबंधन पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया जिसका कुल 24 स्टाफ एवं कामगारों ने इसमें भाग लिया ।

इ) दिनांक 04 दिसम्बर, 2024 को अनुसया शिक्षण प्रसारक मंडल, नाशिक के सहयोग से सभी की जानकारी हेतु प्राथमिक उपचार विषय पर एक कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें कुल 22 स्टाफ एवं कामगारों ने प्रतिभाग लेकर प्राथमिक उपचार की जानकारी हासिल की।

ई) दिनांक 23 दिसंबर, 2024 को बजाज कॅपिटल की सहायता से भारत प्रतिभूति मुद्रणालय से जनवरी 2025 से जून 2025 तक अधिवर्षिता के कारण सेवानिवृत्त होने वाले कर्मचारियों के मार्गदर्शन हेतु एक दिवसीय सत्र का आयोजन किया गया जिसमें सेवानिवृत्ति के पश्चात मिलने वाली राशि के उचित निवेश पर मार्गदर्शन किया गया।

उ) भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के अनुभागों का 23.12.2024 से 28.12,2024 तक जांच बिंदु-2024-25 के अनुसार राजभाषा कार्यान्वयन का आंतरिक निरीक्षण किया गया। इस दौरान कुल ३६ विभागों / अभा का निरीक्षण किया गया।

ऊ) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, नासिक की दिनांक 21-01-2025 (गुरुवार) को एचएएल टाउनशिप, ओझर में महाप्रबंधक एवं अध्यक्ष, न.रा.का.स., नासिक की अध्यक्षता में आयोजित बैठक में भारत प्रतिभूति मुद्रणालय को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए प्रोत्साहन पुरस्कार से सम्मानित किया गया।

कर्मचारी विकास और कल्याण के प्रति प्रतिबद्धता को मान्यता देते हुए, आईएसपी, नासिक को 8 वें इंडिया एचआर समिट एवं अवार्ड, में **वर्ष का सर्वश्रेष्ठ स्वास्थ्य और कल्याण का** प्रतिष्ठित पुरस्कार, 2024 से सम्मानित किया गया। अवार्ड लेते हुए श्री अर्पित धवन, उप महाप्रबंधक (मा.सं.), साथ में श्री सचिन सोनी, उप प्रबंधक (मा.सं.) तथा श्री अभिषेक राय, सहायक प्रबंधक (विधि)।

अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2025 की झलकियाँ

आईएसपी नासिक में 8 मार्च 2025 को अंतराष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस दिन सभी महिला कर्मियो ंको मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल ने शुभकामनाएँ दी और केक काटा गया। महिला कर्मियो ंके लिए आईएसपी जिमखाना हॉल में विभिन्न कार्यक्रमो ंका भी आयोजन किया गया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक को ''कार्यस्थल पर स्वास्थ्य प्रबंधन'' के लिए वर्ल्ड एचआरडी कांग्रेस द्वारा 17 फरवरी, 2025 को ताज लैंड इंड, मुंबई में '' एचआर एक्सीलेंस अवार्ड '' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्री अर्पित धवन, उप महाप्रबंधक (मा.सं.), साथ में श्री सचिन सोनी, उप प्रबंधक (मा.सं.) ने ग्रहण किया।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक में स्वच्छता पखवाड़ा 2025 का आयोजन

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नासिक में 16 जनवरी, 2025 से 31 जनवरी, 2025 तक स्वच्छता पखवाड़ा का आयोजन किया गया।

इस दौरान मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल ने आईएसपी के अधिकारियों, कर्मचारियों, मान्यता प्राप्त यूनियन एवंम एसोसिएशन को स्वच्छता शपथ दिलाई। इसके बाद सभी ने मिलकर आईएसपी कैंटीन के पास स्वच्छता मुहिम चलाई।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय ,नासिक ने स्वच्छता पखवाड़ा 2025 का आयोजन '' स्वभाव स्वच्छता संस्कार स्वच्छता'' थीम के तहत किया है। इस कार्यक्रम के अंतर्गत लोहशिंगवे गाँव में स्वच्छता अभियान चलाया गया और ग्राम पंचायत सदस्यो के साथ मिलकर पूरे गाँव में साफ-सफाई की गई।

आईएसपी, नासिक के पूर्व प्रबंधक (डिज़ाइन) स्वर्गीय श्री पी.बी. चिटनिस के पद्मश्री पुरस्कार को आईएसपी, नासिक को गरिमापूर्वक सौंपना ।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय के पूर्व प्रबंधक (डिज़ाइन) स्वर्गीय श्री पी.बी. चिटनिस की पुत्री श्रीमती दीप्ति चिटनिस ने 26 दिसंबर, 2024 को आईएसपी, नासिक को शताब्दी वर्ष समारोह के अवसर पर विनयपूर्वक अपने पिता का प्रतिष्ठित पद्म श्री पुरस्कार सौंपा। ।आईएसपी नासिक के मुख्य महाप्रबंधक, एसपीएमसीआईएल के मुख्य महाप्रबंधक(मा.सं.) और सीएनपी नासिक के महाप्रबंधक सहित प्रमुख गणमान्य व्यक्तियों की उपस्थिति ने समारोह की शोभा बढाई । स्वर्गीय श्री पी.बी. चिटणीस के परिवार के सदस्यों ने आईएसपी नासिक के अधिकारियों और यूनियन पदाधिकारियों के साथ इस यादगार कार्यक्रम में भाग लिया।श्रीमती दीप्ति चिटनिस का यह हार्दिक भाव श्री पी.बी. चिटनिस की उत्कृष्ट विरासत का सम्मान करता है और राष्ट्र के लिए उनके अमूल्य योगदान को दर्शाता हैं। पद्मश्री पुरस्कार आईएसपी नासिक और एसपीएमसीआईएल के लिए बहुत गर्व का क्षण है,जो प्रतिभूति मुद्रण के क्षेत्र में भारत के इतिहास को आकार देने वाले दिग्गजों के साथ इसके गहरे संबंध का प्रतीक है। आईएसपी, नासिक में इस पुरस्कार को भावी पीढ़ियों के लिए प्रेरणा के प्रतीक के रुप में संरक्षित रखा जाएगा।

उत्कृष्ट प्रशिक्षण एवं संस्थानगत विकास (बेस्ट इन ट्रेनिंग अॅण्ड ऑगनाइनेशनल डेवलपमेंट)
के लिए वर्ल्ड एचआरडी कांग्रेस से " स्टार ऑफ इंडस्ट्री अवार्ड" प्राप्त करते हुए
मुख्य महाप्रबंधक श्री राजेश बंसल तथा उप महाप्रबंधक (मानव संसाधन) श्री अर्पित धवन ।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय, नाशिक रोड
(एस पी एम सी आई एल की इकाई)

Celebrating 100 Years

1925-2025

India Security Press, Nashik Road
(A Unit of SPMCIL)

सुरक्षित मुद्रण हमारी पहचान,
भारत प्रतिभूति मुद्रणालय राष्ट्र की शान।

भारत प्रतिभूति मुद्रणालय INDIA SECURITY PRESS
(भारत प्रतिभूति मुद्रण तथा मुद्रा निर्माण निगम लिमिटेड की इकाई)
(A Unit of Security Printing & Minting Corporation of India Limited)
नाशिकरोड - 422 101 (महाराष्ट्र) Nashik Road - 422 101 (Maharashtra)